RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 51-52 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 3 एवं 10 मार्च, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष-75, अंक : 51-52, 3-10 मार्च 2019 तदनुसार 19-26 फाल्गुण, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

आर्य समाज के संस्थापक

महर्षि दयानन्द सरस्वती

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में आर.के.आर्य कालेज महर्षि दयानन्द मार्ग नवांशहर में पहुंचने पर सभा के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं आर्य समाज नवांशहर के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी का स्वागत करते हुये कालेज के कार्यकारी प्रिंसीपल संजीव डाबर।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में आर.के.आर्य कालेज महर्षि दयानन्द मार्ग नवांशहर में पहुंचने पर पौधारोपण करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। जबकि महामंत्री प्रेम भारद्वाज एवं आर्य समाज नवांशहर के सदस्य उनके साथ खड़े हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में आर.के.आर्य कालेज महर्षि दयानन्द मार्ग नवांशहर में पहुंचे सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी एवं उपस्थित जनसमूह।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक 3 3 मार्च एवं 10 मार्च, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में छात्रों को सम्बोधित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में छात्रों को सम्बोधित करते हुये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में छात्रों को सम्बोधित करते हुये आर्य समाज नवांशहर के वरिष्ठ प्रधान एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री विनोद भारद्वाज जी

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में छात्रों को सम्बोधित करते हुये वैदिक प्रवक्ता श्री राजू वैज्ञानिक।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में भाग लेने पर प्रतियोगी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में भाग लेने पर प्रतियोगी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी मंत्री आर्य समाज नवांशहर।

महाशिवरात्रि का पर्व

ले०–श्री सुदर्शन शर्मा प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में सम्वत् १८९४ की महाशिवरात्रि का दिन महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन महर्षि की अन्तर्लीन सत्य का अन्वेषण करने वाली चेतना ने एक नया मोड़ लिया था। 14 वर्ष के बालक मूलशंकर ने अपने पिता द्वारा सुनाई गई शिव की महिमा से प्रभावित होकर शिवरात्रि का व्रत रखने का निश्चय किया और रात भर जागने का संकल्प लिया। जब अन्य सभी श्रद्धालु आधी रात को एक-एक करके निद्रा देवी की गोद में चले गए तो बालक मूलशंकर अपनी आँखों में पानी के छींटे दे-देकर अपने जागरण व्रत का पूर्णतया पालन करता हुआ अपनी अपार श्रद्धा का परिचय दे रहा था। परन्तु वह श्रद्धा तब कुण्ठित हो गई जब छोटे से चूहे को स्वछन्द वृत्ति से उछल कूद करके शिवजी की मूर्ति पर रखे प्रसाद को खाते देखा। इस उछल-कूद को देखकर मूलशंकर के चित्त पर गहरा प्रभाव पड़ा और मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न हो गई। उसके पश्चात हुई कुछ अन्य घटनाओं ने बालक मूलशंकर के अन्दर वैराग्य की भावना उत्पन्न कर दी। उन घटनाओं में उनकी बहिन तथा चाचा की मृत्यु मुख्य कारण थी। परिणामतः रोग, मृत्यु आदि घटनाओं से व्याकुल होकर मूलशंकर ने सच्चे शिव की प्राप्ति तथा मृत्युञ्जय बनने के उद्देश्य से घर छोड़ने का निश्चय किया।

श्रद्धा और मेधा का समन्वय विपरीत परिस्थितियों में भी नवयुग का निर्माण करने वाले मेधावी महापुरूषों का प्रधान लक्षण है। वे प्रत्येक बात को श्रद्धा से स्वीकार करते थे और उसे बुद्धि से तोलते हुए सत्य की ओर उन्मुख होते हैं। ठीक इसी प्रकार बालक मूलशंकर ने श्रद्धानिष्ठ होते हुए भी अपनी मेधा शक्ति को, सत्यासत्य के विवेक को कभी कुण्ठित नहीं होने दिया। सत्य को ग्रहण करने तथा असत्य के त्यागने की वृत्ति को धारण करते हुए उन्होंने कठोर तपस्या एवं एकाग्रनिष्ठ चिन्तन के उपरान्त सच्चे शिव के स्वरूप को तथा मृत्युञ्जय बनने के उपाय को खोज निकाला। सम्वत् १८९४ में हृदयस्थली में बोया हुआ बीज कठोर तपस्या के बाद पल्लवित और कुसुमित होकर समस्त देश को अपनी सुगन्धि से सुगन्धित कर गया। जिससे देश में एक नई क्रान्ति का जन्म हुआ और एक नए युग का सूत्रपात हुआ।

आवश्यकता इस बात की है कि हम इस बोधरात्रि के पावन पर्व पर ऋषि द्वारा उपलब्ध उस बोध के, उस सत्यज्ञान के मूलमन्त्र को समझे और उसके स्वर में स्वर मिलाकर पूर्णनिष्ठा के साथ अपने जीवन का तदनुसार निर्माण करते हुए जनकल्याण के कार्यों में जुट जाएं। महर्षि के उस बोध का प्रथम मूल मन्त्र है-अन्ध श्रद्धालु बनकर मूर्ति पूजा करना छोड़ दो। यह मूर्तिपूजा किसी पत्थर में उत्कीर्ण ब्रह्मा, विष्णु महेश आदि की कल्पित प्रतिमा बनाकर उसकी पूजा करना मात्र ही नहीं अपितु प्रत्येक ग्रन्थ, परम्परा, रूढि या कर्मकाण्ड के आन्तरिक भाव को बिना बुद्धि का कसौटी पर तोले उसके बाह्य रूप पर टिके रहना भी मूर्ति पूजा ही है। उसे भी त्याग दो। प्रत्येक ग्रन्थ, विचार, परम्परा और कर्मकाण्ड को सत्य की कसौटी पर परखो और उसमें जो सत्य अंश दिखाई दे उसे ग्रहण करो और जो असत्य है उसे छोड़ दो। अपने आपको किसी पूर्वाग्रह या मिथ्याग्रह से ग्रस्त मत समझो। जीवन की सिद्धि सत्यनिष्ठ होने में है, केवल परम्पराओं में नहीं। महर्षि दयानन्द कालिदास के इस वचन का समर्थन करते हैं-

पुराणमित्येव न साधु सर्वों, न चापि सर्वं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते, मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः।।

महर्षि दयानन्द का दूसरा मूलमन्त्र है- पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते। अर्थात् न केवल ब्रह्म ही सत्य है और न केवल प्रकृति ही। बल्कि ये दोनों ही सत्य एवं पूर्ण हैं। उस पूर्ण ब्रह्म से उत्पन्न प्रकृति भी पूर्ण है, मिथ्या या असत्य नहीं। अतः जीवधारी मानव को ऋतावान् एवं ऋतावृधः बनकर इन दोनों के लाभ को प्राप्त करने का यत्न करना चाहिए। तभी जीवन की सफलता है। केवल योग या ज्ञानमार्ग द्वारा ही परमात्मा का साक्षात्कार नहीं होता, अपितु करूणामय होकर कर्मयोग द्वारा समाज का कल्याण करना, उसमें सत्य और न्याय प्रतिष्ठित करके उसे सत्यं शिवं सुन्दरं बनाना भी शिव की उपासना का एक प्रकार है। यह सच्चे शिव की प्राप्ति का एक सुन्दर सोपान है। इसी कारण संसार के प्राणियों की उपेक्षा करके केवल आत्मलाभ के लिए किसी पर्वत कन्दरा के अन्दर सतत ब्रह्मलीन रहने की अपेक्षा ऋषि ने ईश्वर को साक्षी रखकर जनमानस में सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए और उसके निमित्त अपने जीवन की बलि देना भी स्वीकार किया।

ऋषि की दृष्टि में आजकल के भौतिक विज्ञान के उत्कर्ष के युग में भोग तृष्णा के संलिप्त तथा असत्य एवं अन्याय से पीड़ित समाज को उससे मुक्त करना सच्ची शिव पूजा है। वैसे तो जातस्य हि ध्रुवो मृत्युः इस ध्रुव सत्य के अनुसार सभी को एक न एक दिन शरीर त्याग कर मृत्यु की गोद में जाना ही है और उस कार्य के लिए चाहे कितना दुःख प्राप्त करना हो, चाहे प्राण भी चले जाएं, परन्तु अपने इस मनुष्य धर्म से पृथक न होना ही मृत्युञ्जय पद को प्राप्त करने की अचूक औषध है।

यदि हम इस महाशिवरात्रि के दिन ऋषि के उस संदेश को जो उन्होंने कठोर तपस्या एवं साधना के उपरान्त बोध प्राप्त करने के अनन्तर हमें दिया। उनके द्वारा दिए गए बोध को समझ कर अपने देश के धार्मिक, सामाजिक व राजनीतिक क्षेत्र में व्याप्त असत्य व अन्याय को दूर करके सत्य और न्याय को प्रतिष्ठित करने के लिए अपनी-अपनी शक्ति के अनुरूप सहयोग करें तभी इस बोधरात्रि को मनाने की सार्थकता है, परन्तु इसके लिए हमें स्वयं सत्यनिष्ठ तथा जाति, धर्म वर्ण आदि के भेदभाव से मुक्त होकर सर्वे भवन्तु सुखिनः की भावना को अपनाना होगा। केवल शिवरात्रि के दिन आर्य समाज में बोध पर्व मनाने से हमें कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। हमें इस बोध पर्व को जन जागरण अभियान बनाना होगा।

महर्षि दयानन्द जन्मदिवस एवं शिवरात्रि का पर्व

ले०–श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

28 फरवरी को हम महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस और 4 मार्च को शिवरात्रि का पर्व ऋषि दयानन्द बोध दिवस के रूप में मनाएंगे। महर्षि दयानन्द का प्रादुर्भाव इस राष्ट्र का सौभाग्य था और शिवरात्रि का पर्व भारतवासियों के लिए सौभाग्य की रात थी। इस रात्रि के प्रभाव से एक बार ज्वलन्त दैवी प्रकाश हुआ जो न केवल भारत का ही अपितु सारे संसार के अन्धकार और दु:ख के नाश करने का कारण बना। इस शिवरात्रि ने बालक मूलशंकर के अन्दर ऐसी विचाराग्नि को उद्बुद्ध किया जिसने भारत ही नहीं सम्पूर्ण विश्व को जागृत कर दिया। वह जागृति किसी से छिपी नहीं है। इस रात्रि से महर्षि दयानन्द ने जो बोध प्राप्त किया उस बोध ने सम्पूर्ण भारतवर्ष में फैले अन्धकार को दूर करने का कार्य किया। अगर हर विवेकशील मनुष्य यह निश्चय कर लें कि जो बात सत्य है उसी को हम मानेंगे और जो बात बुद्धि, ज्ञान और सृष्टि नियमों के विपरीत है उसको नहीं मानेंगे तो संसार का दु:ख और वैमनस्य दूर हो जाए। महर्षि दयानन्द ने बोध प्राप्त करके संसार को जो मार्ग दिखाया है वह मार्ग हमारे लिए प्रेरणादायक है।

महर्षि दयानन्द ने मानव मात्र की उन्नति के लिए यह आवश्यक समझा कि सबके धार्मिक विचार एक से होंवे और वे विचार सृष्टि नियम, बुद्धि तथा वेदज्ञान के अनुकूल होवें। उन्होंने यह भी अनुभव किया कि किसी जाति की राजनैतिक व्यवस्था, उसके धार्मिक विचार एवं पारस्परिक व्यवहार के गठन पर निर्भर रहती है। जिस जाति के धार्मिक विचार ऊंचे हों, जिसका आचार-विचार उत्तम और जिसके पारस्परिक व्यवहार में सच्चाई और प्रेम हो उसकी राजनैतिक व्यवस्था भी श्रेष्ठ होगी और किसी अन्य जाति को उस पर राज करने का साहस नहीं होगा। भारत को उच्च बनाने का उन्होंने आर्य समाज को साधन बनाया और उच्च बनाने के सभी साधनों का प्रचार किया। स्वराज्य मिल जाने पर आर्य समाज को देश की राजनैतिक व्यवस्था को दृढ़ एवं उत्तम बनाए रखने के लिए लोगों के आचार विचार और पारस्परिक व्यवहार को सही दिशा में बनाए रखने का विशेष कार्य करना है। महर्षि द्वारा प्रदर्शित वेद मार्ग ही एक मात्र मार्ग है जो मानव मात्र को एक जगह एकत्र कर सकता है और एक दूसरे के वैमनस्य को दूर कर सकता है। ऐसे महान् गुरू की शिक्षा को कभी न भुलाना चाहिए और जिन लोगों के हृदय में सत्य को जानने और परोपकार करने की लगन है उनको तो स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों का पालन करना चाहिए।

शिवरात्रि की रात को हिन्दू लोग तो पवित्र मानते ही हैं परन्तु उन सबके तथा उन लोगों के लिए भी जो महर्षि दयानन्द को अपना शिक्षक मानते हैं यह आवश्यक है कि इस रात्रि को स्वामी जी महाराज के सिद्धान्तों पर विचार करें। सत्य और ईश्वर में आस्था रखते हुए आत्मा को बलवान बनाएं और अन्धविश्वास और असत्य की लहरों से बचें। इस दिन प्रत्येक आर्य को शान्त भाव से आत्म निरीक्षण करके अपनी त्रुटियों को दूर करने और आर्य समाज की उन्नति में योगदान देने का संकल्प करना चाहिए। आज देश और संसार को महर्षि दयानन्द जैसे महान् पुरूषों की आवश्यकता है जो राष्ट्र का सही मार्गदर्शन कर सकें। धार्मिक और सामाजिक उत्थान के बिना राजनैतिक उत्थान सम्भव नहीं है। महर्षि की दिव्य दृष्टि ने इस तथ्य को भली भांति देख लिया था। तभी तो जब उनसे प्रश्न किया गया कि भारत का उद्धार किन उपायों से हो सकता है तो उन्होंने कहा था कि जब तक देश और समाज के लोगों का एक धर्म, एक भाषा और एक समान सुख-दु:ख की अनुभूति नहीं होती तब तक समाज की उन्नति और उसका योगक्षेम भली भांति सिद्ध नहीं हो सकता। महर्षि दयानन्द देश की राजनैतिक एकता के लिए विदेशी शासन का अन्त और स्वराज्य की स्थापना के लिए प्रयत्नशील थे। धार्मिक एकता के लिए वे भूमण्डल में वैदिक धर्म का प्रचार-प्रसार और प्रभुत्व देखना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने संसार को वेदों की ओर चलने का आह्वान किया और मत-मतान्तरों पर प्रबल प्रहार किया। सामाजिक एकता के लिए उन्होंने कुरीतियों और विविध बुराईयों का खण्ड़न करके समाज सुधार का प्रशंसनीय कार्य किया।

सामाजिक एकता के मार्ग में जन्मना जात-पात का बड़ा भयंकर रोड़ा है। इसके रहते सामाजिक राजनैतिक अभ्युत्थान के कार्य में आशानुरूप प्रगति होना सम्भव नहीं है। महर्षि दयानन्द ने जात-पात की भावना को मिटाने और गुण कर्मानुसार मानव की योग्यता का निरूपण करने का सिद्धान्त दिया। सांस्कृतिक एकता के लिए देश भर में समान भाषा की आवश्यकता पर बल दिया। समान भाषा की आवश्यकता पर बल देते हुए उन्होंने स्वयं गुजराती होते हुए भी अपने सभी ग्रन्थ हिन्दी और संस्कृत में लिखे। महर्षि दयानन्द ने लोगों के आर्थिक विकास के लिए गोरक्षा पर विशेष बल दिया। यदि हमारे देश के कर्णधार तुष्टिकरण की अवलम्बन किए बिना हिन्दी भाषा के प्रचलन और गौहत्या निषेध के लिए कटिबद्ध हो जाए तो देश का बहुत कल्याण हो सकता है। महर्षि दयानन्द को श्रद्धाजंलि प्रस्तुत करते हुए पूर्व राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधा कृष्णन् ने कहा था कि- जब देश पर संकट के बादल छाए हुए हों तब हमें शत्रु की चुनौती को स्वीकार करके उस शिक्षा को याद करना है जो महर्षि दयानन्द ने हमें दी है। स्वामी दयानन्द एक महान् सुधारक और प्रखर क्रान्तिकारी महापुरूष तो थे ही साथ ही उनके हृदय में सामाजिक अन्यायों को उखाड़ फैंकने की प्रचण्ड अग्नि भी विद्यमान थी। उनकी शिक्षाओं का हमारे लिए बहुत महत्त्व है।

हम सभी आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के अनुयायियों का कर्त्तव्य है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का जन्मदिवस और शिवरात्रि के पर्व को बोध पर्व के रूप में धूमधाम के साथ मनाएं। इन दोनों दिवसों को केवल मनाएं ही नहीं अपितु स्वयं भी बोध प्राप्त करने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द की विचारधारा से सम्पूर्ण समाज को अवगत कराएं, तभी हमारा महर्षि दयानन्द का जन्मदिवस और बोध पर्व मनाना सार्थक होगा।

बोध पर्व की वास्तविकता

ले०–श्री सुधीर शर्मा कोषाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

प्रतिदिन सूर्य उदय होने के साथ ही रात्रि का आना निश्चित हो जाता है। रात्रि हर रोज आती है और सूर्य के उदय होते ही चली जाती है। यह संसार का अटल नियम है और इस नियम को कोई भी नहीं बदल सकता। जब मनुष्य परमपिता परमात्मा के द्वारा बनाए गए नियमों को बदलने का असफल प्रयास करता है या फिर उन नियमों का उल्लंघन करने का साहस करता है तो दु:ख को प्राप्त करता है। मनुष्य के जीवन में बोध का यही अर्थ है कि वह कोई भी कार्य परमात्मा के नियमों के विरूद्ध न करे। जिस दिन प्रत्येक मनुष्य को यह बोध हो जाएगा कि अमुक कार्य करने योग्य है, अमुक कार्य नहीं करने के योग्य है। जब मनुष्य को अपने कर्त्तव्य और अकर्त्तव्य का बोध हो जाएगा, वही दिन उसके लिए बोधपर्व बन जाएगा। ऐसे ही शिवरात्रि पर्व के महत्त्व के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मतावलम्बियों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। अपने पौराणिक भाई इस शिवरात्रि को इसलिए अधिक महत्त्व देते हैं कि इस दिन शिव ने सृष्टि की उत्पत्ति की थी और प्रलय भी इसी दिन करेगा। इसलिए इस भयंकर समय को टालने के लिए शिव के उपासक शिव की आराधना करते हैं। आर्य समाज में इस शिवरात्रि को बोध रात्रि के रूप में मनाते हैं, क्योंकि आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को इसी शिवरात्रि के दिन सच्चे शिव का ज्ञान हुआ था। यदि सच कहा जाए तो आर्य समाज की स्थापना केवल चूहे के कारण ही हुई जिसको देखकर मूलशंकर ने ज्ञान प्राप्त किया और उनके हृदय में सच्चे शिव को प्राप्त करने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। शिवरात्रि की इस घटना से तो आर्य बन्धु अवगत ही हैं कि मूलशंकर के पिता शिव के उपासक थे और अपने पुत्र को भी शिव का उपासक बनाना चाहते थे। इसलिए शिवरात्रि के व्रत की महानता बताकर मूलशंकर को व्रत रखने के लिए बाध्य किया। मूलशंकर को भी शिव के दर्शन करने की आकांक्षा थी। अत: वह उसको प्राप्त करने के लिए शरीर के कष्टों को सहकर भी जागता रहा। परन्तु मूलशंकर कुछ ही क्षणों में देखता है कि जिस शिव के वह दर्शन पाना चाहता था उसी शिव पर एक छोटा सा चूहा आकर उछल कूद मचा रहा है तथा उसके नैवेद्य को भी खा रहा है। लेकिन वह शिव अपनी रक्षा के लिए हिल भी नहीं रहा था। तब मूलशंकर के मन में एक ज्ञान की किरण जागी, फिर उसने विचार किया कि जिस शिव ने सारे संसार को उत्पन्न किया, जो सारे संसार का पालन करता है वह शिव और ही है। इसी धारणा को मन में लेकर मूलशंकर उसकी खोज में आगे बढ़ा। जहां-जहां पर भी उन्हें पता चला कि अमुक तपस्वी योगी या ऋषि सच्चे शिव के दर्शन करा सकता है, अनेकों कष्ट उठाकर भी उस व्यक्ति तक जाने की चेष्टा की। अन्त में इसी प्रकार विचरते हुए मथुरा के एक तपस्वी योगनिष्ठ गुरू विरजानन्द की प्राप्ति हुई तथा उनके चरणों में बैठकर सच्चे शिव के रहस्य को जानकर ज्ञान प्राप्त किया।

महर्षि दयानन्द के गुरू स्वामी विरजानन्द से सच्चे शिव का ज्ञान प्राप्त करके सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए जिन सिद्धान्तों की नींव ड़ाली, जिन लुप्त परम्पराओं को जगाया उसी के परिणामस्वरूप आर्य समाज की स्थापना हुई। महर्षि दयानन्द जी शिवरात्रि का व्रत न रखते तो उन्हें सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिए प्रेरणा भी नहीं मिलती और न ही आर्य समाज की स्थापना होती। महर्षि दयानन्द जी उस शिवरात्रि को स्वयं जगे और बाद में अपना सारा जीवन दूसरों को जगाने में लगा दिया। जो चिंगारी उनके हृदय में उस शिवरात्रि को प्रज्जवलित हुई थी उस चिंगारी को उन्होंने बुझने नहीं दिया। अनेकों पर्वतों, कन्दराओं, गुफाओं में जाकर उन्होंने उस चिंगारी को खूब प्रज्जवलित करने का प्रयास किया और बुझने के स्थान पर उन्होंने उसे उसी प्रकार जलाए रखा। गुरू विरजानन्द जी के चरणों में बैठकर उनकी सारी शंकाओं का समाधान हो गया। जिस प्रकार का ज्ञान महर्षि दयानन्द जी प्राप्त करना चाहते थे, उस ज्ञान की प्राप्ति उन्हें गुरू विरजानन्द की कुटिया में प्राप्त हुई। गुरू विरजानन्द ने आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन से उनके अन्दर के संशयों को मूल रूप से नष्ट कर दिया। जिस शिव को जानने के लिए उन्होंने घर को त्याग कर जंगल का रास्ता पकड़ा था, उसका यथार्थ बोध उन्हें उनके चरणों में बैठकर प्राप्त हुआ। अगर उस शिवरात्रि को महर्षि दयानन्द सो जाते तो भारत का भाग्य सो जाता। वे स्वयं जगे और सारे देश को जगा दिया। लोग वेदोक्त मार्ग को भूल कर अन्य मत-मतान्तारों में जकड़े हुए थे। पाखण्ड़ और अन्धविश्वास के कारण समाज में अनेक प्रकार की कुरीतियां बढ़ रही थी। ऐसी परिस्थिति में महर्षि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द से जो आर्ष ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त किया था, उसी ज्ञान से उन्होंने लोगों को बताया कि वेदों में कहीं पर भी मूर्ति पूजा का विधान नहीं है। अपने सम्पूर्ण जीवन में वे इसी प्रकार वेदों के प्रचार का कार्य करते रहे। उन्होंने अपनी संस्कृति, सभ्यता और मातृभाषा को अपनाने पर जोर दिया। परिणामस्वरूप देश में एक नई क्रान्ति का उदय हुआ और लोगों में अपने देश के प्रति स्वाभिमान की भावना पैदा हुई। यह सब उस शिवरात्रि के कारण हुआ जिस रात्रि को महर्षि दयानन्द ने जागरण किया।

शिवरात्रि के रूप में बोधपर्व हर वर्ष आता है और चला जाता है। परन्तु इस बोधपर्व की वास्तविकता क्या है, इसका क्या अभिप्राय है? यह कभी हमने सोचने का, विचार करने का साहस ही नहीं किया। अगर आज हम सभी इस बोधपर्व की वास्तविकता के परिचित हो जाएं, बोध के वास्तविक स्वरूप को समझ लें तो हमें भी मूलशंकर की तरह बोध प्राप्त हो सकता है।

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती

ले०–श्री अशोक परूथी एडवोकेट रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के आधुनिक तत्त्ववेता, सुधारक तथा श्रेष्ठ पुरूष ही नहीं थे अपितु वह आधुनिक भारत के कुछ प्रमुख राष्ट्र निर्माताओं में से एक हैं। उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षित वर्ग में नास्तिकता पनप रही थी और सामान्य जनता अन्धविश्वास और रूढ़ियों से ग्रस्त थी। उन्होंने आचार और धार्मिक पुनरूत्थान के आधार पर नए भारत की नींव सुदृढ़ की। उन्होंने घोषित किया कि वेदों तथा प्राचीन भारतीय चिन्तन में विज्ञान सम्मत और नैतिक धार्मिक सत्य निहित है। उन्होंने वेदों तथा प्राचीन तत्त्वज्ञान की ऐसी बुद्धिपूर्वक व्याख्या की कि कड़े से कड़ा बुद्धिवादी भी उससे सहमत हो गया। इसी के साथ उन्होंने ऐसे शुद्ध ईश्वरवाद की प्रतिष्ठा की जिससे पश्चिमी विचारक और चिंतक भी सहमत थे। प्राचीन धर्मग्रन्थों और तत्त्वज्ञान में से उन्होंने ऐसे मोती प्रस्तुत किए जिन्हें देशवासियों ने पूरे विश्वास और आस्था के साथ ग्रहण किया। परिणामस्वरूप पश्चिमी एवं प्रतिस्पर्द्धी सम्प्रदायवादियों के आक्रमण पस्त हो गए। हताश भारतीय मानस भारतीय तत्त्वज्ञान की ज्योति से एक नई प्रेरणा प्राप्त कर नैतिक एवं वैचारिक दृष्टि से स्वावलम्बी और शक्ति सम्पन्न होने लगा। ऋषि की यह वैचारिक देन उनकी पहली उपलब्धि थी।

महर्षि दयानन्द गुजरात में जन्मे थे। घर से वह सच्चे शिव की खोज में सत्यज्ञान की प्राप्ति के लिए वनों पर्वतों एवं विभिन्न प्रदेशों में घूमते रहे। आगरा, ग्वालियर, जयपुर, काशी, अजमेर, बम्बई, पूना, कलकत्ता, पटना, जोधपुर आदि स्थानों में ही नहीं अपितु देश के अनेक जनपदों और नगरों में उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया। संसार के अन्य महापुरूषों की भांति उन्होंने शारीरिक यातनाएं सही। विरोधियों, प्रतिस्पद्धियों के विरोधों और अत्याचारों का सामना किया। पूरे विश्वास और साहस के साथ उन्होंने देश में व्याप्त कुरीतियों, अज्ञान, विषमता और अन्याय का सामना किया। इसी समय उन्होंने मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। इसी के साथ उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश एवं वेदों के भाष्य आदि प्रस्तुत कर हिन्दी के माध्यम से जनता से सीधा सम्पर्क स्थापित किया। उन्होंने किसी संस्था, मठ मन्दिर की गद्दी नहीं सम्भाली, न वह अपने नवीन आन्दोलनों के सर्वेसर्वा बने। वह तो अपने आपको समाज का एक सामान्य सदस्य कहते थे। इसके बावजूद केवल अपने व्यक्तिगत प्रयत्नों से उन्होंने देश में एक अभूतपूर्व सामाजिक एवं धार्मिक क्रान्ति कर दी। शंकराचार्य के बाद पदयात्रा के माध्यम से अपूर्व धार्मिक क्रान्ति करने वाले वह दूसरे संत थे। महर्षि की यह धार्मिक क्रान्ति उनकी दूसरी बड़ी उपलब्धि थी।

आर्य समाज के माध्यम से देश और विदेशों में शिक्षा, समाज सुधार, दलितोद्धार, स्त्री शिक्षा, नवीन गुरूकुल शिक्षा प्रणाली, गोरक्षा, हिन्दी प्रचार आदि नानाविध क्षेत्रों में जो कार्य हुआ है उसे प्रत्येक राष्ट्रवादी स्वीकार करता है। इन कार्यों की महत्ता है और इन कार्यों को सम्पन्न कर आर्य समाज की गरिमा बढ़ी है। परन्तु महर्षि की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी मानवता को वह वैचारिक देन थी जो उन्होंने आर्य समाज के नियमों, सामाजिक व्यवस्था और शिक्षा के क्षेत्र में नई दृष्टि देकर प्रस्तुत की है। आर्य समाज के नियम मानवता के लिए पथ प्रदर्शक हैं। ऋषि न स्वयं समाज के सूत्रपात बने, न उन्होंने कोई अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। बल्कि उन्होंने आर्य समाज के नियमों के द्वारा एक नई जीवन दृष्टि दी। ऋषि ने सीख दी– अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए, दूसरे आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना और शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना है। तीसरे सब अपनी उन्नति में सन्तुष्ट न रहें, प्रत्युत सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझें, साथ ही मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें। ऋषि ने अपने जीवनकाल के लिए तथा बाद के लिए इन नियमों को ही समाज और राष्ट्र का पथ प्रदर्शक नियुक्त किया था। दूसरे धर्मों और सम्प्रदायों के पैगम्बर और उनकी पूरी धार्मिक परम्परा और उत्तराधिकारी हैं, परन्तु महर्षि ने मानव मात्र की उन्नति, सबकी एवं संसार भर की उन्नति और अविद्या के नाश के कार्य को ही प्राथमिकता दी थी। यह महर्षि की तीसरी उपलब्धि थी। महर्षि दयानन्द ने गुरू विरजानन्द जी के सान्निध्य में सच्ची शिक्षा ग्रहण कर उन्हें राष्ट्र को पथ प्रदर्शन करने के माध्यम से सच्ची गुरूदक्षिणा दी थी।

प्रतिवर्ष बोध दिवस मनाते हुए हम यह संकल्प लें कि महर्षि दयानन्द ने सच्चे शिव को प्राप्त करके जो मार्ग दिखाया है, हम भी उसी मार्ग का अनुसरण करेंगे। जिस प्रकार महर्षि दयानन्द ने बोध प्राप्त करके संसार का मार्गदर्शन किया है उसी प्रकार हम भी महर्षि दयानन्द के कार्यों से प्रेरणा लेकर हम भी मानवता के लिए कार्य करेंगे। हमारा बोध पर्व मनाना तभी सार्थक होगा जब हम महर्षि दयानन्द के पदचिह्नों पर चलने का प्रयास करेंगे। ऋषि बोध पर्व के अवसर पर हमें महर्षि की उपलब्धियों का स्मरण करते हुए ऋषि के आदेशों को कार्यान्वित करना चाहिए।

आत्मबोध का पर्व

ले०–डा. महेश विद्यालंकार बी/जे० २२, (पूर्वी) शालीमार बाग, दिल्ली-५२

आर्य समाज के निर्माण और इतिहास में शिवरात्रि का महत्वपूर्ण स्थान है। इस पर्व पर ही महामानव ऋषि दयानन्द की प्रसुप्त–चेतना उद्‌बुद्ध हुई थी। जीवन में भयंकर झंझावात आया था। विचारों में तेज तूफान उठा था। शिव और अशिव का, धर्म और अधर्म का, सत्य और असत्य का भयंकर द्वन्द्व चला था। इसी कारण वह देवपुरुष अज्ञान–अविद्या, मोह–माया–मद–लोभ एवं ऐश्वर्यों के बन्धनों को तोड़ने में समर्थ हो सका। हृदय में बोध हुआ। सत्य–ज्ञान प्रकाशित हो उठा। जीवन सच्चे शिव की ओर अग्रसर हुआ। जीवन नया संकल्प लेकर निकल पड़ा। अनेक कष्ट, बाधायें, विरोध आए पर वह महायोगी आगे ही बढ़ता गया। एक रात जागने के बाद वह जीवन भर नहीं सोया। उसी देवात्मा के बोध और स्मृति का प्रेरक पर्व है–शिवरात्रि।

पर्व प्रेरणा देते हैं!

पर्व जीवन में प्रेरणा–चेतना–उत्साह–संकल्प आदि का अमर सन्देश देने के लिए आते हैं। प्रत्येक पर्व अपने मूल में जीवन–सन्देश लिए हुए हैं। जीवन की अन्तरंग चेतना को सोचने–विचारने और प्रबोधने की प्रेरणा देते हैं। आत्मबोध और दिशा बोध जीवन की संजीवनी शक्ति है। इसी से मानव देवत्व को प्राप्त करता है। आत्मबोध से ही मानव स्व और पर का कल्याण कर सकता है। इसीलिए आत्मबोध भारतीय संस्कृति की मूल–चेतना रही है। यही मूल चेतना सम्पूर्ण शास्त्रों में आद्यन्त विद्यमान है। घटनायें–परिस्थितियां–उपदेश–सन्देश आदि सभी के जीवन में आते हैं–किन्तु कोई बिरला ही बुद्ध, गाँधी, दयानन्द, श्रद्धानन्द, विवेकानन्द, गुरुदत्त आदि बनते हैं। इतिहास साक्षी है–छोटी छोटी बातों, घटनाओं और उपदेशों ने जीवन बदल दिए। कालाकल्प कर दिया। पतित जीवन में पवित्रता व धार्मिकता भर दी। भोगी–विलासी और दुर्व्यसनी जीवन तपस्वी त्यागी और परोपकारी बन गये।

यह सब तब होता है जब हम अन्दर से जागरूक होते हैं। जब आत्म–चेतना की पकड़ गहरी, मजबूत और पक्की होती है। आत्मा जरा से लोभ–लालच और मोह में नहीं फिसलती है। संकल्प में तीव्रता–आतुरता तथा वेदना होती है।

पर्व, उत्सव, वेद–कथाएं एवं जन्मदिन आदि आते हैं और चले जाते हैं। किन्तु हमारे जीवन में कहीं भी परिवर्तन–नूतनता एवं दिव्यता नहीं आती। जरूर कहीं मूल में भूल है। कई तरह की शताब्दियां मनायीं। उसकी बाहर की धूमधाम–टीपटाप कुछ देर रही, पर अन्तर्जगत् को कोई चेतना एवं प्रेरणा नहीं मिली। बदलाव बाहर की दुनिया में तेजी से हो रहा है। अन्दर की दुनिया सोई और खोई पड़ी है। हम अन्दर के सुख से बेसुध हैं। आवश्यकता है अन्दर की ओर देखने की।

आत्मबोध का पर्व

शिवरात्रि आत्मबोध का पर्व है। जीवन–चेतना का उत्सव है। आत्मानुभूति को जाग्रत करने का दिवस है। प्रकाश और चेतना की तिथि है। शिवरात्रि श्रेष्ठ संकल्पों एवं व्रतों को दुहराने का त्यौहार है। आज आर्य समाज को आवश्यकता है–आत्मशुद्धि आत्म–निरीक्षण और आत्मविश्लेषण की। मन–वचन और कर्म में आई हुई अपवित्रता–अधार्मिकता–अव्यावहारिकता एवं नास्तिकता आदि दुर्गुणों को दूर करने की। जीवन में व्याप्त काम–क्रोध–लोभ–मोह–घृणा आदि बुराइयों को दूर करने की। जब तक जीवन में तप–त्याग–सेवा–परोपकार–श्रद्धा आदि श्रेष्ठ गुणों को स्थान नहीं देंगे तब तक न तो अपना कल्याण होगा, न परिवार बनेगा, न समाज को कोई आदर्श दे सकेंगे। ऋषिवर के जीवन में ये सभी गुण थे। तभी अल्पकाल में उन्होंने अद्‌भुत, अद्वितीय एवं अनुपम कार्य कर दिखाया। इन्हीं गुणों से मानवता में गति आती है। निर्माण होता है। आज हमारे जीवन कर्मकाण्ड और उपासनाकाण्ड के दिखावटी रूपों में मग्न हैं। जिसका परिणाम है जीवन में, परिवार में, समाज में सात्विकता–शुद्धता और धार्मिकता हटती जा रही है। जीवन खोखले होते जा रहे हैं, जीवन में भक्ति–भावना नहीं दिखाई देती है। आज आर्य समाज के इतिहास में जो अमर हैं, जिनका नाम श्रद्धा और गौरव से लिया जाता है, उनका चरित्र बोलता है। उनके जीवन में आदर्श था। त्याग की भावना थी। उन्होंने आर्य समाज के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। बदले की भावना कभी नहीं रखी। उन्होंने कभी नाम–पद–स्वार्थ के लिए समाज को माध्यम नहीं बनाया।

आज लोग आर्य समाज को व्यवसाय बना रहे हैं। बदले में लाभ लेना चाह रहे हैं। कोई नाम के लिए, कोई पद के लिए, कोई राजनैतिक स्वार्थ के लिए, कोई व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए, तो कोई धन के लिए आर्य–समाज को माध्यम बना रहा है। यह प्रवृत्ति

(शेष पृष्ठ 10 पर)

शिवरात्रि का पर्व और मृत्युञ्जय ऋषि दयानन्द

ले०–श्री आचार्य सत्यव्रत शास्त्री, विद्याभास्कर

प्राचीन रूढ़िगत परम्परा में फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को महाशिवरात्रि का परम पावन पर्व व्रत के रूप में निराहार रहकर बड़ी श्रद्धाभक्ति के साथ समस्त आधुनिक तथाकथित सनातन धर्मावलम्बी महानुभाव मनाते चले आ रहे हैं।

इस महत्त्वपूर्ण परम प्रसिद्ध पर्व का आधार भागवत आदि पुराणों की ही परम्पराओं पर अवलम्बित है। जिनका वैदिक वाङ्मय के अन्तर्गत ईश्वरीयज्ञानभूत चार वेदसंहिता ऋग्, यजु, और अथर्व से, उनके व्याख्यानभूत–ब्राह्मणों से तथा आरण्यकों, उपनिषदों, कात्यायनादि श्रौत सूत्रों, पारस्करादि गृह्य सूत्रों तथा आपस्तम्बादि धर्म सूत्रों, मन्वादि धर्मशास्त्रों से अथवा वेदांगों से कोई प्रयोजन नहीं। जिन की समस्त मान्यताओं का एक मात्र आदर्श बिन्दु पुराण–उपपुराण आदि समस्त परवर्ती एवं काल्पनिक परस्पर विरुद्ध साहित्य ही है। जो जीवन भर उन्हीं के कल्पित एवं मनघड़न्त मन्तव्यों को ही अपना चरम जीवन लक्ष्य समझते हैं, उनकी ही उलझनों में यावज्जीवन उलझे रहते हैं। उनसे परम प्राचीन आदि सृष्टि में ईश्वरीय प्रेरणा से ज्ञान रूप में प्रादुर्भूत आर्ष वेदज्ञान का प्राचीन ऋषि मुनि प्रणीत वैदिक साहित्य का तदनुकूल मन्वादि स्मृतियों का–धर्मशास्त्रों का, अध्ययन करना उनके लिए अक्षम्य अपराध है, भयंकर पाप है, एक विडम्बना है या यह कहना भी अनुचित न होगा कि उनकी स्थूल दृष्टि उस अन्याहत आर्ष ज्योति तक पहुंच ही नहीं पाती। उन्हें वह दिव्य दृष्टि प्राप्त ही नहीं हुई जो जीवन पर्यन्त काल्पनिक सत्य नारायण की ही कथा को भगवान की कथा मानते रहे और उसी को अपना इष्टदेव मान कर उसी का पाठ मात्र करके मोक्ष जैसा दुर्लभ परम आनन्द प्राप्त करना चाहते रहे। वही उनके लिए अथ और इति है। उससे आगे कुछ भी 'न भूतो न भविष्यति' है। यह प्रवृत्ति इधर विक्रम की 4–5 शताब्दियों से अधिक प्रबल होती हुई दृष्टिगत हो रही है।

ऐसे विज्ञान के युग में भी उनका ज्ञान विकसित नहीं हो सका। आज भी जो पैदल यात्रा करके रेल गाड़ी में भी खड़े रहकर गंगा जल से भरी कांवर लेकर सुदूर प्रान्तों में नगर, उपनगरों में जाकर उस भोलानाथ शिवशंकर व भोले महादेव पर बड़ी आस्था और विश्वास से भावविभोर होकर उपवास और व्रत रख कर शिव की कृत्रिम प्रतिमा पर जल चढ़ाते हैं उसकी षोडशोपचार पूजा करते हैं। यह सब क्रिया शिवरात्रि महापर्व के शुभ अवसर पर अर्धरात्रि के लगभग की जाती है। कहीं–कहीं दिन भर शिव मन्दिरों में अवच्छिन्न गति से जलधारा प्रवाहित होती रहती है। इसका बड़ा महात्म्य माना जाता है।

अब विचार करना यह है कि इस समस्त क्रिया कलाप में रूढ़िगत परम्परा में कितनी वास्तविकता है और क्या ऐतिहासिकता है, इनका रहस्य अभी तक भी उन भोले भाले श्रद्धालु परम शैव भक्तों को पुरानी अन्ध परम्परा पर चलने वाले व्यक्तियों को आज भी विदित नहीं हो सका।

आश्चर्य तो यह है कि आज सारा हिन्दू समाज इस भूल भुलैइया में पड़ा हुआ है, वह सुविज्ञ हो या अनभिज्ञ, साक्षर हो या निरक्षर, किन्तु इस रूढ़िगत परम्परा में सब एक हैं। 'अन्धेनैव नीयमाना: यथाऽन्धा:' इसके उदाहरण बने हुए हैं।

इस शिवरात्रि का एक दूसरा पक्ष भी है और वह यह है कि इसी प्राचीन परम्परा के आधार पर आज से लगभग 181 वर्ष पूर्व सन् 1837 ई. में मंगलवार को वीर विक्रमादित्य की 19वीं शती में एक अद्वितीय वेदोद्धारक, आजन्म ब्रह्मचारी, परम सारस्वत, प्रबल सुधारक, वर्तमान प्रजातन्त्र प्रणाली के आविष्कारक सत्यं, शिवं, सुन्दरम् के परम उपासक, ज्ञान ज्योति प्रसारक, युगप्रवर्तक, नवजीवन दाता, महान क्रान्तिकारक, परम प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक, ईश्वर के अनन्य भक्त, क्रान्त द्रष्टा, सन्त देव दयानन्द की दिव्य दृष्टि और उसकी सूझबूझ और मान्यता के आधार पर यह शिवरात्रि का पर्व अपना विशेष महत्त्व रखता है। उसका यह नया स्वरूप हमारे लिए एक नई ज्योति को उदय कर रहा है, एक नवीन आदर्श, एक नया सत्य सिद्धान्त के रूप में प्रदान कर रहा है। इस शिवरात्रि का सम्बन्ध महान क्रान्तिकारी आदित्य ब्रह्मचारी परम ऋषि से भी है। वह है 19वीं शताब्दी का कौपीनधारी महाव्रती तपस्या और त्याग की साक्षात् मूर्ति, महर्षि दयानन्द सरस्वती।' इनका जन्म सौराष्ट्र (काठियावाड़) के मौर्वी राज्यान्तर्गत टंकारा उपनगर में सन् 1824 ई. को हुआ था। ये जन्मना औदीच्य ब्राह्मण थे। इनके पिता परम शैव थे–शिव के उपासक थे। उसी परम्परा के आधार पर 14 वर्षीय बालक मूल शंकर को भी पूज्य पिता के आदेशानुसार इसी शिवरात्रि का व्रत और पूजन आदि कुल क्रमागत विधि विधानपूर्वक करने के लिए शिवालय में जाना पड़ा और सत्य शिव की खोज में तन्मय होकर वह उस समस्त दृश्य को बड़े आदर भाव से रखते रहे। किन्तु अर्द्धरात्रि के पश्चात् सभी उपासक शिव भक्तों को निद्रा देवी ने अपने पाश में ऐसा बांधा कि सब पूजा का सामान इधर उधर अस्त–व्यस्त होता हुआ न देख सके, उनके झोंकों ने सभी भक्त समुदाय को अपनी गोद में सुला लिया और एक अभूतपूर्व आनन्द का सुखपूर्वक रसास्वादन करने लगे।

उन्हें 'समाधि सुषुप्तौ ब्रह्मरूपता' का अनुभव होने लगा। किन्तु सच्चे शिव का उपासक एकमात्र आराधक होनहार बालक मूलशंकर इस समस्त क्रिया–कलाप को जो वहां इस काल्पनिक शिव की ब्रह्ममयी प्रतिमा पर हो रहा था, देख कर एक महान् असमञ्जस एवं आश्चर्य में पड़ गया और बड़ी गम्भीरता से उस सब दृश्य को अपने ज्ञान चक्षुओं से एकटक देखता रहा और मन ही मन उसकी वास्तविकता पर ऊहापोह करता रहा। पर इस गुत्थी को न सुलझा सका, जितना सोचता था समाधान करता था उतनी ही गांठ पड़ती जा रही थी। कुछ भी समाधान नहीं कर पा रहा था। तब उसने अन्तत: विवश होकर भयभीत होते हुए वास्तविकता को जानने के लिए अपने पूज्य पिता जी को जगाया और उनके सम्मुख वह कौतूहल पूर्ण दृश्य प्रस्तुत किया। पिता जी उसकी शंकाओं का संयुक्तिक समाधान करने में सर्वथा असमर्थ रहे और मेधावी प्रत्युत्पन्न–मति बालक को अपने शुष्क सारहीन तर्कों से प्रभावित व सन्तुष्ट नहीं कर सके।

'होनहार बिरवान के होत चिकने पात।' वह उनकी सभी युक्तियों को सुनता रहा। उसी समय उन्हें यह आभास हुआ कि वास्तविक शिव तो कोई और ही है जो इस पाषाणमयी जड़मूर्ति से भिन्न चेतन सत्ता है। यह कैसा शिव शंकर है, पशुपति महादेव है त्रैलोक्य-आर्तिहर 'हर' है यह तो अपनी रक्षा करने में भी सर्वथा अक्षम है, अशक्त है तो यह दीन दुखियों की असहायों की शरणागतों की अपने भक्तों की रक्षा कैसे कर सकेगा। 'अन्तरं महदन्तरम्'।

बस इसी सब दृश्य ने, एक मूषक की लीला ने उसकी अठखेलियों ने उसे विवश किया कि वह सत्य शिव की खोज में अपने जीवन को अर्पण कर दे और वास्तविक शिव के दर्शन करे। 'ज्ञानाग्निः सर्वकर्माणि भस्मसात् कुरुतेऽर्जुन।' उसकी ज्ञानाग्नि ने उसे पिता के थोथे आदेश पालन से सर्वथा मुक्त कर दिया। उसने उसी क्षण संकल्प किया और दृढ़ निश्चय किया कि 'लक्ष्य वा साधयेयम्, शरीरं वा पातयेयम्' बस पिता माता के समस्त पारिवारिक जनों के माया मोह को त्याग कर सच्चे शिव की खोज में निकल पड़े। यही शिवरात्रि आज की घटना से केवल शिवरात्रि न रहकर दयानन्द बोध रात्रि नाम से सर्वत्र आर्य जगत में प्रसिद्ध हुई। तभी से इस शिवरात्रि का यह वैदिक स्वरूप आर्य जनता के सामने आया और भ्रान्त जनता को वास्तविक शिव के दर्शन की एक प्रेरणा मिली।

उधर पौराणिक कथानक के आधार पर देवासुर संग्राम के समय समुद्र का मन्थन किया गया और मन्दराचल पर्वत को मन्थन दण्ड बनाया, वासुकि नाग की रस्सी बनाई। इस प्रकार दोनों की सहायता से समुद्र मन्थन हुआ। मन्थनस्वरूप समुद्र से कई रत्न उत्पन्न हुए, उनके साथ-साथ अमृत और हलाहल विष भी प्रकट हुआ। उस विष की लपटों से देवता जलने लगे। जब किसी को भी यह साहस नहीं हुआ कि इस हलाहल विष को ग्रहण कर सके, तब सब देव मिलकर शिवजी के पास गए और उनसे प्रार्थना की कि भगवान् इस विष को आप शान्त करें। शिव ने इस प्रार्थना को स्वीकार किया और समुद्र के मन्थन से निकले हुए उस कालकूट रूप महाविष का पान किया और देवताओं की तथा समस्त संसार की रक्षा की। विष को पचाने का सामर्थ्य शिव में ही था। यह कार्य किसी अन्य के वश का नहीं था। इस हलाहल विष को पीकर और उसे पचा कर ही शिव मृत्युञ्जय कहाए।

इस समुद्र-मन्थन का और विषपान का वास्तविक रहस्य क्या है। यह एक पृथक विषय है। इस पर कभी यथावसर पुनः प्रकाश डाला जाएगा। ये कथानक काल्पनिक होने पर भी रहस्यपूर्ण हैं पर मानव बुद्धि वहां तक पहुंची नहीं। उधर देव दयानन्द ने भी सच्चे शिव की खोज में अपने जीवन में अनेक बार साक्षात विषपान किया है। शिव का विषपान तो एक कल्पनामात्र है पर ऋषि का विषपान सर्वथा प्रमाणित है और प्रत्यक्ष है। ऋषि ने स्थूल विष के साथ-साथ सूक्ष्म विष का भी पान किया। उन्होंने भी मृत्युञ्जय उपाधि को प्राप्त किया और समस्त जन मानस की एक बार पुनः अपने खोए हुए वेदामृत को पान करने को वेदालोक में अपना जीवन निर्माण का सुलभ अवसर प्रदान किया।

उसने भी संसार में प्रचलित कुरीतियों का, तमसाच्छन्न पाखण्ड का, अनेक काल्पनिक मत-मतान्तरों का, संसार में व्याप्त बहु देवतावाद का, ईश्वर के नाम पर विभिन्न स्वरूपों में परिणत होने वाले अनेकानेक भगवानों का, जनता के दुख दारिद्रय का बड़ी निर्भीकता से सोत्साह दलन किया और एक नया वेद का आलोक प्रदान किया उसी को सर्वश्रेष्ठ ज्ञान का आदिस्त्रोत स्वीकार किया और स्वतः प्रमाण माना।

ऋषि दयानन्द की राष्ट्र को देन-ऋषि दयानन्द सदा सत्य की खोज में लगे रहे। वे जीवन भर सत्यपरायण, कर्त्तव्यनिष्ठ, ईश्वर विश्वासी, परम आस्तिक, अनाथ रक्षक, नारी उद्धारक, वेदों के अनन्य भक्त, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता के समर्थक, स्वराज्य के प्रबल पोषक, प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली के पुनरूद्धारक रहे। उन्होंने समस्त राष्ट्र को एक नया दृष्टिकोण दिया, नया आलोक दिया जो कार्य पूर्ववर्ती महात्मा बुद्ध, आचार्य शंकर और बड़े-बड़े देशभक्त व विदेशी यात्री भी नहीं कर सके, उसके लिए वीतराग सन्यासी ने सर्वप्रथम अपनी लेखनी, वाणी तथा अन्य साधनों द्वारा देश की एकता को पुष्ट किया और विदेशियों के असांस्कृतिक अव्यवहारिक अनैतिकतापूर्ण आक्रमणों को समूल नष्ट कर प्राचीन देशानुसार देशभक्ति, आर्य मर्यादा, आर्य धर्म, आर्य गौरव, वैदिक सभ्यता संस्कृति की उसके उच्चतम सत्य सिद्धान्तों की पुनः प्रतिष्ठा की, उनको जागृत किया और स्व-भाषा वेश-सभ्यता-संस्कृति आचार, विचार, मर्यादा आदि की ओर समस्त देश का ध्यान आकृष्ट किया।

प्राचीन रूढ़िगत अन्धविश्वासों का, सम्प्रदायों का, सप्रमाण युक्ति-युक्त निराकरण किया। ईश्वर का वास्तविक स्वरूप और उसका तर्कसंगत लक्षण किया। प्रत्येक सिद्धान्त का, मन्तव्य का, वेद की कसौटी पर मन्थन करके उसकी वास्तविकता की घोषणा की। उस पर वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, प्रचलित माया गुरुडम के ढोंग को समूल नष्ट किया, सच्चे गुरुओं का मार्ग प्रशस्त किया। बिना जाति भेद के सर्वसाधारण व्यक्ति को आत्मोन्नति का अवसर प्रदान किया। सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय आदि सर्वांगीण उन्नति में पूर्ण योगदान उनका सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। उन्होंने देश में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, मिथ्याचार, दुराचार अनैतिकता, नास्तिकता आदि संक्रामक दुःसाध्य महारोगों का बड़ी कुशलता के साथ उपचार करते हुए सर्वभूतहित की भावना से उनका प्रबल विरोध किया। उन्होंने रोग का निदान किया, ढूंढा और तदनुकूल चिकित्सा की। आओ आज इस पुण्य पावन पर्व के सुअवसर पर हम भी कुछ बोध प्राप्त करें और कुछ व्रत ग्रहण करें, जिससे देश की रक्षा में, समाज सुधार में, अपना सक्रिय योगदान दे सके और ऋषि के ऋण से उऋण हो सकें। उसकी भांति हम भी सच्चे शिव के विविधताओं से कल्याण करने वाले प्रभु के परम उपासक होकर उसके पूर्ण विश्वासी और आस्तिक बनकर वेदों का स्वाध्याय करें, कर्त्तव्यपरायण हों, अपने सदाचरण के, उज्ज्वल चरित्र के द्वारा स्वयं अपना और समस्त देशवासियों का सच्चा पथ प्रदर्शन करते हुए ही भगवान कृष्ण के इस अमर वाक्य को सर्वथा सार्थक कर सकेंगे, यद्यद् आचरति श्रेष्ठः, तद् तद् एव इतरो जनः। स यत् प्रमाणं कुरूते, लोकस्तदनुवर्तते।''

केवल जीवन पर्यन्त दूसरों को ही सम्बोधित न करते रहें, उन्हीं को अपने प्रभावशाली प्रवचनों का, ओजस्वी एवं रोचक भाषणों का ही लक्ष्य न बनाते रहें।

अब समय आ गया है कि उन सब भाषणों का, प्रवचनों का, प्रभावशाली ओजस्वी वक्तृताओं का, धारावाही उपन्यासों का मुख अपनी ओर करके उन सब का लक्ष्य स्वान्तः को बनाकर उसे अपने जीवन में भी ढालने का सफल प्रयत्न करें जिसे जीवन भर दूसरों में ही ढालने का निष्फल प्रयास करते रहें। इसी दीक्षा व्रत के व्रती बनकर इसी दीक्षा में दीक्षित होकर हम ऋषि का बोध दिवस सार्थक कर सकेंगे, तभी-''कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'' यह परम पावन वैदिक उद्घोष पूर्ण हो सकेगा।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी अपने समय के एक मात्र सत्य प्रतिपादन के निर्भीक प्रभावशाली वक्ता थे

ले०–पं० उम्मेद सिंह विशारद, वैदिक प्रचारक गढ़ निवास मोहकमपुर देहादून उत्तराखण्ड

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द जी महान धार्मिक क्रान्ति के निर्भीक प्रणेता कहकर याद किये जाते है। देश में बढ़ते हुए धर्माडम्बरों रूढियों तथा सामाजिक कुरीतियों को दूर करने उनके स्थान पर नये अर्थात् सत्य वेदानुसार आध्यात्मिक तत्वों को पुनः जाग्रत करने का महान कार्य महर्षि दयानन्द जी ने अधिकांश अपनी वाणी शक्ति से ही सम्पन्न किया। यो तो उन्होंने अनेक भाष्य व मौलिक रचनाऐं भी की है। परन्तु उनकी भाषण शक्ति निर्भीक वाणी ने भारत वर्ष की आध्यात्मिक आत्मा को झकझोर दिया। महर्षि दयानन्द जैसा निर्भीक वक्ता शायद ही कोई हुआ है।

उनकी कटुक्तियां और ओजस्वी शब्द समाज के मिथ्याडम्बरों को चकनाचूर बना डालते थे, परन्तु जीवन विषय पर स्वामी जी उतनी ही शान्त और गम्भीर भाषा से श्रोताओं पर अपने गहन अध्ययन विद्वता और विशिष्टता की छाप डालने से नहीं चूकते थें सत्य के समर्थन में स्वामी जी ने कभी पक्षपात नहीं किया। जिनके यहां वह आमन्त्रित होते थे। पर इसका अर्थ यह नहीं कि स्वामी जी कठोर प्रकृति के थे।

उनके प्रवचन सरस गम्भीर और मधुर भी उतने ही होते थे स्वामी जी की प्रवचन प्रतिभा बहुमुखी थी। श्रोताओं पर स्थिर प्रभाव डालने की क्षमता उनमें कूट–कूट कर भरी हुई थी। महर्षि दयानन्द जी की समालोचनाएं बड़ी निष्पक्ष थी। वे टीका टिप्पणी करने में बड़े ही धुरन्धर थे। उनकी वाणी में प्रभावशाली शक्ति होती थी। उनके अधिकांश प्रवचन खण्डनात्मक ही होते थे। उनमें उनके अथाह ज्ञान और तार्किक कुशलता का परिचय मिलता है। महर्षि दयानन्द जी में अन्य गुणों की अपेक्षा उनका आत्म तेज जो उनके नेत्रों से प्रकाशित होता था, वह तेज श्रोताओं को पराभूत करने की असाधारण क्षमता रखता था। यह प्राणशक्ति वक्ता में एक विशेष प्रकार का चुम्बकत्व पैदा करती है। उन्नत आत्मबल से युक्त वक्ता के नेत्रों में जो चमक प्रस्फुटित होती है, उसके समक्ष श्रोताओं के मस्तक श्रद्धा से झुक जाते थे।

एक बार महर्षि दयानन्द जी किसी विषय पर खण्डनात्मक प्रवचन कर रहे थे। सभा में कर्ण सिंह नामक एक राजपूत बैठा था, वह महर्षि दयानन्द जी की कटुक्तियों को सहन नहीं कर सका, उसने झट तलवार निकाल ली और स्वामी जी की ओर लपका, स्वामी जी उससे कुछ न बोले पर उस पर ऐसी तीक्ष्ण दृष्टि डाली कि वह राजपूत हतप्रभ हो गया और तलवार निकलकर स्वामी जी के चरणों में आकर गिर गया। दयालु महर्षि दयानन्द जी ने उसे क्षमा कर दिया।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी आजीवन सत्य के पक्षधर थे

अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का नाम करण ही उन्होंने सत्य के अर्थ के प्रकाश के लिये किया था। वह सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में लिखते है कि मनुष्य का आत्मा सत्या सत्य का जानने वाला है, तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है, और न किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करे, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मतमतान्तर का विरूद्ध वाद न छूटेगा तब तक आनन्द नहीं होगा। यदि हम सब मनुष्य विशेष विद्वज्जन ईष्या द्वेष छोड़ सत्य असत्य का निर्णय करके सत्य के ग्रहण और असत्य का त्याग करना चाहे तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के साथ लगभग सभी पौराणिक विद्वानों ने मिलकर मूर्ति पूजा को सिद्ध करने का प्रयास किया, किन्तु वे सभी महर्षि दयानन्द जी के अकाट्य तर्कों से परास्त होते रहे, और एक भी प्रमाण मूर्ति पूजा पर वेदों का न दे सके थे।

न तस्य प्रतिमा अस्ति यस्य नाम महद्यशः

अर्थातः उस परमात्मा की कोई प्रतिमा (मूर्तिया पैमाना) नहीं है, जिसका कि यश बड़ा है। फिर तवलकार और बृहदारण्यक उपनिषद को भी देखना चाहिए जिनमें बतलाया है कि जीवात्मा के भीतर भी वह परमात्मा व्यापक है, तथा उसे वाणी, मन, आंख, कान प्राणों को भी अपने अपने कामों में लगाने वाला माना है। और उसे एक अद्वितीय माना है। इन सब प्रमाणों पर विचार करने से सिद्ध होता है कि परमेश्वर के ज्ञान के बिना मुक्ति पाने का कोई दूसरा मार्ग नहीं है। वह परमेश्वर अरूप, अनादि, तथा अनन्त है। वही ब्रह्मा सबसे बड़ा और सबका सहारा है। आजकल की मुक्ति तो वही समझी जाती है कि जीव व परमात्मा एक ही है, बस यह ज्ञान होना ही मुक्ति है। यह आजकल के वेदान्तियों का मत है। किन्तु यह सच्चा वेदान्त नहीं है और न वेदों का सिद्धान्त है। इस बात की पडताल करने पर षट दर्शनों के प्रणेताओं की मुक्ति के विषय में क्या सम्मति है–इसका तत्व मालूम हो जायेगा। मालूम होता है कि यह मूर्ति पूजा जैन मत वालो से हममें घुस आई है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का हिन्दी की प्रथम प्रमाणिक जीवन चरित्र से:–

महर्षि जी कहते हैं मिथ्या कथन को गप्प कहते है, इसलिए जिससे आठ गप्प हो उसको गप्पाष्टक। इसी भांति जिसमें आठ सत्य हो उसको सत्याष्टक कहते है।

आठ गप्पों का वर्णन

1. मनुष्यकृत ब्रह्म वैवर्तादि जो पौराणिक ग्रन्थ है। (2) देव बुद्धि से पाषाणादि को पूजन-1 (3) शैव, शाक्त, गाणपत्य और वैष्णव आदि समुदाय-(4) तन्त्र ग्रन्थों से प्रतिपादित वाम मार्ग (5) विजयादि मादक द्रव्यो का सेवन (6) पर स्त्री गमन (7) चोरी करना (8) छल अभिमान, मिथ्या भाषण यह आठ गप्प है इनको छोड़ देना चाहिए।

आठ सत्यों का वर्णन

(1) ईश्वर और ऋषि प्रणीत ऋग्वेदादि 21 शास्त्र (2) ब्रह्मचर्याश्रम में गुरू की सेवा तथा निज स्वधर्मानुष्ठान पूर्वक वेदों का पठन पाठन (3) वेदोक्त वर्णाश्रमानुकूल निज धर्म सन्ध्यावंदन अग्निहोत्र का अनुष्ठान। (4) शास्त्रानुसार विवाह करना, पंच महायज्ञ विधि का अनुष्ठान, ऋतु काल में निज स्त्री से संभोग, श्रुति, स्मृति की आज्ञानुसार आधार, व्यवहार रखना (5) इसमें शम, दम, तपश्चरण, यम, प्रवृति, समाधि उपासना और सत्संगपूर्वक वानप्रस्थ आश्रम को ग्रहण करना (6) विचार विवेक वैराग्य, पराविद्या का अभ्यास सन्यास ग्रहण करके सब कर्मों के फलों की इच्छा न करना (7) ज्ञान विज्ञान से समस्त, अर्थ, मृत्यु, जन्म, हर्ष, शोक, काम, क्रोध, लोभ, मोह, संग द्वेष के त्यागने का अनुष्ठान-1 (8) अविद्या अस्मिता, राग द्वेष, अभिनिवेश, तम, रज, सत, सब क्लेशों से निवृत हो पंच महाभूतो से अतीत होकर मोक्ष स्वरूप और आनन्द को प्राप्त होना। यह आठ सत्याष्टक हे, इनको ग्रहण करना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को आर्य समाज की स्थापना क्यों करनी पड़ी

उन्होंने अपनी सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक विचारधारा को क्रियात्मक रूप देने के लिए 10 अप्रैल 1875 में बम्बई के एक मुहल्ले गिरगांव में आर्य समाज की स्थापना की। संसार में सत्य प्रकाश फैलाने के लिए सदैव के लिए एक वैचारिक सुधारवादी क्रान्तीकारी संगठन बना गये। उन्होंने अनेक ग्रन्थ लिखे जिनमें से उनका मुख्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश है। सत्यार्थ प्रकाश में उन्होंने रूढ़ीवादी विचार धारा, धार्मिक अन्धविश्वास विचारधारा सामाजिक क्षेत्र की विचारधारा और राजनैतिक विचारधाराओं के असत्य चलन पर कठोर प्रहार किये और नये सुधारवादी विचारों से भारत वर्ष में हलचल मचा दी। आर्य समाज तब से आज तक उक्त समस्याओं पर एक सजग प्रहरी की भांति कार्यरत है। जब तक संसार में महर्षि के विचार और आर्य समाज रहेगा, तब तक सुधारवादी आन्दोलन चलता रहेगा।

भूलेंगे नहीं सदियो ऋषीराज तेरा आना-।
जिसने भी तुझे समझा वो हो गया दीवाना-।।

(पृष्ठ 6 का शेष)

आत्मबोध का पर्व

अत्यन्त चिन्तनीय एवं निदनीय है। आज बोधोत्सव पर इन समस्याओं पर सोचना, विचारना होगा कि उस पुण्यात्मा ने क्या इसीलिए आर्य समाज बनाया था? हम मूल से हट और कट रहे हैं। हममें भी वही प्रवृतियां और बातें आ रही हैं जिनका ऋषि ने विरोध किया था। सत्य हमसे दूर होता जा रहा है। अपने स्वार्थ के लिए जो चाहे जैसा सिद्धान्त-रीति-नीति एवं पद्धति बनाने और चलाने लगा है। इससे संगठन की एकता समाप्त हो जाती है।

यह पतन क्यों?

हमारे मन्दिरों के सत्संगों में उपस्थिति कम होती जा रही है। आर्य समाजों का श्रद्धा और भावनापूर्ण वातावरण क्षीण हो रहा है। संस्थायें लड़ाई-झगड़े के दलदल में फंसती जा रही हैं। धार्मिक-नैतिक-सामाजिक मूल्य बड़ी तेजी से तोड़े और बदले जा रहे हैं। व्यक्ति टूट रहा है। परिवार बिखर रहे हैं। व्यक्ति की अस्मिता संघर्ष में है। वेद-संस्कृति-धर्म-इतिहास आदि संघर्ष के दौर में हैं। इनके स्वरूप और आदर्श को विकृत एवं बदलने के प्रयास चल रहे हैं। संस्कृत भाषा जो देवभाषा, आदिभाषा, वेदवाणी आदि नामों से विभूषित है, जो समग्र भारतीय वाङ्मय की सन्देश-वाहिका रही, जिसमें सभी नैतिक मूल्य, आचार संहिता, जीवन पद्धति एवं जीवनदर्शन विद्यमान हैं, उसे अव्यावहारिक एवं अनुपयोगी कहकर विदा किया जा रहा है शिखा और यज्ञोपवीत को यवनों की तलवारें तो न काट सकीं, पर नई पीढ़ी में वे अपने आप हट रहे हैं नई पीढ़ी स्वदेशी खान-पान, रहन-सहन, भाषा-वेश भूषा आदि से दूर हटती जा रही हैं। ये सभी बातें राष्ट्र के लिए अत्यन्त घातक तथा भयावह हैं।

आर्य समाज का आविर्भाव जागरूक प्रहरी, राष्ट्र चिन्तक, वेद-धर्म, संस्कृति एवं आस्तिक मूल्यों के रक्षक के रूप में हुआ है। इसकी विराट्-चेतना और जीवन-दर्शन में विश्व बन्धुत्व 'सर्वे भवन्तु सुखिनः, वसुधैव कुटुम्बकम्, यत्र विश्वं भवति एक नीडम्, सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु' आदि भावनायें विद्यमान हैं। इसका आधार सत्य पर है। इसका प्रवर्त्तक सत्य के लिए जहर के प्याले पीता रहा।

बोध पर्व पर आर्यसमाज अपने स्वरूप, लक्ष्य और कर्त्तव्य को पहिचाने। वेद-संस्कृति-धर्म आदि का दायित्व हमारे ऊपर है। आज के भौतिक एवं भोगवादी संसार को कोई कुछ दे सकता है तो वह आर्यसमाज ही क्योंकि उसका जीवन दर्शन अपने में पूर्ण तर्कसंगत एवं व्यावहारिक है। अतः इस पुनीत अवसर पर ऋषि बताए मार्ग पर चलने का संकल्प करें। तभी इस महापर्व की सार्थकता सिद्ध होगी।

शिवरात्रि मूलशंकर के लिये मोक्षदायिनी बोधरात्रि बनी

ले०–मनमोहन कुमार आर्य, 196 चुक्खूवाला-2 देहरादून-248001

सनातन धर्म सृष्टि के आरम्भ से प्रवृत्त धर्म है। इसका आधार वेद और वैदिक शिक्षायें हैं जो ईश्वर प्रदत्त होने से पूर्णत: सत्य पर आधारित हैं। वेद संसार में सबसे पुराने ग्रन्थ हैं इस कारण इन्हें पुराण भी कहा जाता है। वेद में किंचित मानवीय इतिहास नहीं है। चार वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तकें हैं। महाभारत युद्ध तक आर्यावर्त्त वा भारत सहित पूरे विश्व में वेदों का ही प्रचार था और सर्वत्र एक वैदिक धर्म ही प्रतिष्ठित था। महाभारत के बाद देश में अज्ञान व अन्धकार छा गया।

देश में छोटे-छोटे राज्य स्थापित हो गये। देश की शक्ति विभाजित होने से कमजोर हुई। देश में वेद व उसका ज्ञान विलुप्त हो गया। वेदों के गलत अर्थ किये व समझे जाने लगे। वेदों में ईश्वर के अनेक गुणों का वर्णन आता है। कल्याणकारी व मंगलकारी होने के कारण ईश्वर को 'शिव' कहा जाता है। सर्वव्यापक होने से ईश्वर का नाम 'विष्णु' है। शिव और विष्णु नाम के सर्वव्यापक व सर्वशक्तिमान ईश्वर से पृथक सत्तावान कोई अन्य ईश्वर व देवता नहीं है। यह दोनों गुणवाचक नाम एक ही ईश्वर के हैं। अज्ञानता के काल में ईश्वर के गुणवाचक इन नामों शिव व विष्णु को पृथक ईश्वर वा देवता मान लिया गया। कुछ व्यक्तियों ने इन नामों से शिव पुराण और विष्णु पुराण नामक बृहद ग्रन्थों की रचनायें भी कर लीं। इनको प्रतिष्ठा दिलाने के लिये इनके लेखकों ने ग्रन्थकार के रूप में अपना नाम न देकर ऋषि वेद व्यास जी का नाम रख दिया।

वेदव्यास जी पांच हजार वर्ष पूर्व हुए महाभारत युद्ध के समकालीन थे और शिव व विष्णु पुराणादि 18 पुराण बौद्ध व जैन काल के बाद लिखे गये। इन ग्रन्थों में अप्रामाणिक व अविश्वसनीय इतिहास व कथन हैं जो इन ग्रन्थों को विवेक दृष्टि से पढ़ने पर ज्ञात होते हैं। शिव पुराण की रचना के बाद ही इसके अनुयायी शैवों ने शिवरात्रि व्रत व पर्व का आरम्भ किया था।

शिवपुराण ग्रन्थ के अनुसार शिव के लिंगों की स्थापना कर मन्दिरों का निर्माण स्थान-स्थान पर हुआ। इन मन्दिरों की स्थापना से जो दान व चढ़ावा आता था उससे पुजारियों को लाभ होता था। इस कारण वह मूर्तिपूजा के समर्थक व प्रचारक बन गये और अतिश्योक्तिपूर्वक मूर्तिपूजा के लाभ बताने लगे। देश के अधिकांश लोग शैव मतावलम्बी बन गये और फाल्गुन मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी के दिन को शिवरात्रि पर्व घोषित किया गया। इस शिवरात्रि के दिन व्रत व उपवास सहित मन्दिरों में उपवासपूर्वक रात्रि को जागरण करने लगे। जागरण में भजन कीर्तन व शिवपुराण का पाठ आदि होने लगा। गुजरात में 12 फरवरी, 825 को मौरवी नगर के टंकारा ग्राम में एक उच्च कुलीन औदीच्य ब्राह्मण कर्षनजी तिवारी के यहां मूलशंकर जी का जन्म हुआ। आयु के 14वें वर्ष में इस बालक ने अपने शिवभक्त पिता की प्रेरणा से भगवान शिव की प्रसन्नता के लिये व्रतोपवास किया। शिवरात्रि की रात को मन्दिर में जागरण करते हुए शिव की पिण्डी पर चूहों को उछलकूद करते देखकर इस बालक मूलशंकर के मन में ईश्वर के सर्वशक्तिमान होने व शिव लिंग के पार्थिव व शक्तिहीन होने के विरोधाभास ने मूर्तिपूजा के प्रति अनास्था उत्पन्न कर दी। सच्चे शिव की तलाश और मृत्यु पर विजय के लिये वह पितृगृह से आयु के 22वें वर्ष में निकल पड़े।

वर्तमान में इन्हीं मूलशंकर को सारा संसार वेदों के मर्मज्ञ विद्वान ऋषि दयानन्द के नाम से जानता है। फाल्गुन कृष्ण दशमी के दिन मूलशंकर का जन्म हुआ था। सन् 1839 की शिवरात्रि को इन्हें बोध प्राप्त हुआ अत: आर्यसमाज शिवरात्रि को ऋषि दयानन्द बोधोत्सव के रूप में मनाता है।

ऋषि दयानन्द ने गृहत्याग के बाद पौराणिक तीर्थ स्थानों का देशाटन कर यहां निवास करने वाले विद्वानों से धर्म, योग व इतिहास आदि विषयों की जानकारी प्राप्त की। घर से निकलने के समय वह संस्कृत और यजुर्वेद का अध्ययन वा उसे कण्ठ कर चुके थे। उन्होंने सन् 1860 से 1863 के ढाई वर्षों में मथुरा में दण्डी गुरु स्वामी विरजानन्द सरस्वती जी से संस्कृत की आर्ष व्याकरण अष्टाध्यायी-महाभाष्य-निरुक्त प्रणाली का अध्ययन किया। प्राय: धर्म संबंधी सभी विषयों पर स्वामी दयानन्द जी ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी से शंका समाधान भी किया था। यह बता दें कि गुरु विरजानन्द के समान आर्ष संस्कृत व्याकरण का ज्ञानी गुरु पूरे देश व विश्व में कहीं नहीं था। स्वामी दयानन्द जैसा योग्य व जिज्ञासु शिष्य भी कहीं कोई और नहीं था। गुरु दक्षिणा के समय स्वामी जी ने अपने गुरु जी की प्रेरणा से असत्य व अविद्या मिटाने व सत्य और विद्या का प्रचार करने का व्रत लिया और आगरा आकर प्रचार आरम्भ कर दिया था। स्वामी जी ने विलुप्त वेदों को अत्यन्त पुरुषार्थ से प्राप्त कर उनका अध्ययन किया और वेदों के यथार्थ भावों के अनुरूप अपनी मान्यतायें

स्थिर कीं। वह वेद को स्वत: व परम प्रमाण मानते थे और संसार के अन्य सभी ग्रन्थों के वेदानुकूल भाग को परत: प्रमाण स्वीकार करते थे। वेद विरुद्ध विचारों व मान्यताओं को वह असत्य, भ्रामक व त्याज्य स्वीकार करते थे। उनका मत था कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना व सुनना सुनाना सभी आर्यों वा मनुष्यों का परम धर्म है।

ईश्वरीय ज्ञान वेदों का विश्व में प्रचार करने के लिये स्वामी दयानन्द जी ने सन् 1875 वर्ष के चैत्र शुक्ल पंचमी अर्थात् 10 अप्रैल को मुम्बई में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इसके बाद देश के अनेक स्थानों पर आर्यसमाज की स्थापना का क्रम चलता रहा। स्वामी जी ने वैदिक धर्म के पुनरुद्धार व प्रचार के लिये पंचमहायज्ञ विधि सहित सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, संस्कारविधि, आर्याभिविनय, व्यवहारभानु, गोकरुणानिधि, आर्योद्देश्यरत्नमाला आदि अनेक ग्रन्थों की रचना की। उन्होंने यजुर्वेद का सम्पूर्ण भाष्य सहित ऋग्वेद के 10 मण्डलों में से 6 मण्डलों का पूर्ण और सातवें मण्डल का आंशिक संस्कृत व हिन्दी भाषाओं में पदच्छेद, अन्वय, संस्कृत व हिन्दी में पदार्थ एवं भावार्थ भी किया है। अन्य अनेक ग्रन्थ भी स्वामी जी ने लिखे हैं। इन सभी ग्रन्थों की वेदों व वैदिक धर्म के पुनरुद्धार, प्रचार व प्रसार सहित देश व समाज के उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका है। स्वामी जी ने वेद विरुद्ध मतों के आचार्यों से संवाद, वार्ता, शास्त्रार्थ आदि भी किये। उनका सबसे प्रसिद्ध शास्त्रार्थ काशी में 16 नवम्बर, सन् 1869 को देश के तीस शीर्ष पण्डितों से हुआ था। सभी सनातनी पौराणिक विद्वान वेदों को ईश्वरीय ज्ञान और स्वत: प्रमाण स्वीकार करते हैं। शास्त्रार्थ मूर्तिपूजा पर था परन्तु सभी पण्डितगण मिलकर भी वेदों से मूर्तिपूजा के पक्ष में कोई प्रमाण नहीं दे सके थे। यहां तक कि उनमें से अनेक पण्डितों को स्मृति में दिये गये धर्म व अधर्म के लक्षण भी ज्ञात नहीं थे।

स्वामी दयानन्द जी ने जिन दिनों वर्ष 1863-1883 में धर्म प्रचार किया, उन दिनों आजकल की तरह रेल व सड़क यातायात की सुविधाये नहीं थी। इस पर भी उन्होंने अविभाजित पंजाब, संयुक्त प्रान्त उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, दिल्ली, राजस्थान, संयुक्त पूर्वी व अविभाजित बंगाल, महाराष्ट्र, गुजरात, बिहार, मध्यप्रदेश आदि प्रदेशों में प्रचार यात्रायें कीं। इन प्रदेशों के अनेक नगरों आदि में कुछ-कुछ दिन रहकर धर्म प्रचार किया। वहां के लोगों से वार्तालाप आदि किया और आर्यसमाज भी स्थापित किये। स्वामी जी अपने प्रवचनों में सत्य धर्म का मण्डन और असत्य मत व मान्यताओं का युक्ति व तर्क पूर्वक खण्डन करते थे। उनका उद्देश्य सत्य मान्यताओं को प्रतिष्ठित करना और असत्य मान्यताओं का लोगों से त्याग कराना था।

इसका कारण यह है कि केवल सत्य ही मनुष्य जाति की उन्नति का कारण है और सत्य के विपरीत बातें मनुष्य को पतन के मार्ग पर ले जाती हैं। ऋषि स्वामी दयानन्द जी महाभारत के बाद सबसे बड़े समाज सुधारक हुए। उन्होंने त्रैत सिद्धान्त वा त्रैतवाद अर्थात् ईश्वर-जीव-प्रकृति की सत्ता का सिद्धान्त दिया। देश को आजाद कराने और स्वराज्य स्थापित करने का मूल मन्त्र भी उन्हीं की देन हैं। वह समूचे विश्व समुदाय को सत्य विद्याओं के आदि ईश्वरीय ज्ञान वेद धर्म का पालन करता हुआ देखना चाहते थे जिससे सब सुखी व परजन्म में मोक्ष के अधिकारी बन सकें। आर्यसमाज का उद्देश्य ईश्वर की वेदाज्ञा 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' अर्थात् 'विश्व को सत्य व श्रेष्ठ विचारों वाला बनाने' का कार्य आज भी अपूर्ण है। वेदानुयायी आर्यों का मुख्य दायित्व ईश्वर की इस वेदाज्ञा को पूरा करना है। इसके लिये सभी लोगों तक सत्य व असत्य का स्वरूप पहुंचाना होगा। आर्य को अपने इस कर्तव्य पर विशेष ध्यान देना चाहिये।

ऋषि दयानन्द ने समाज सुधार का अविस्मणीय एवं महिमाशाली कार्य किया। उन्होंने समाज से जन्मना जातिवाद व अस्पृश्यता के कलंक को दूर करने का आह्वान किया। इन्होंने इस परम्परा को वेदविरुद्ध व समाज के लिए हानिकारक घोषित किया। स्त्री व शूद्रों को वेदाध्ययन का अधिकार भी उन्हीं की देन है। स्वामी दयानन्द जी ने बाल विवाह, बेमेल विवाह आदि के स्थान पर पूर्ण युवावस्था में गुण-कर्म-स्वभाव के अनुसार विवाहों को उत्तम बताकर प्रोत्साहित किया। विधवा विवाह का समर्थन भी आर्य विचारधारा में निहित है। ईश्वर की पूजा व उपासना के स्थान पर मूर्तिपूजा को ऋषि दयानन्द ने वेद शास्त्र विरुद्ध, अनुपयोगी व लाभरहित बताया। वह अवतारवाद, मृतक श्राद्ध, फलित ज्योतिष तथा भूत-प्रेत आदि के विचारों को भी अनुचित व अनावश्यक मानते थे। जिस युग में कोई सोच भी नहीं सकता था, उस समय ऋषि दयानन्द ने एक दलित भाई की सूखी रोटी खाकर सामाजिक समरसता का सन्देश दिया था और ब्राह्माणों द्वारा विरोध करने पर उन्हें कहा था कि परिश्रम से अर्जित धन से प्राप्त अन्न व उससे स्वच्छतापूर्वक बनाया गया भोजन सभी के लिये भक्ष्य होता है।

ऋषि दयानन्द ने आर्यावर्त्त वा भारत का हर प्रकार से पूर्ण हित किया। उन्होंने धार्मिक अज्ञान व अन्धविश्वासों को दूर कर श्रेष्ठ व मजबूत समाज की नींव डाली थी और सच्चे ईश्वर की सच्ची पूजा को प्रवृत्त किया था। ईश्वर के साक्षात्कर्ता और वेदों के मर्मज्ञ अनूठे विद्वान देव दयानन्द को हम सादर नमन करते हैं।

बोधोत्सव आया है, जागोगे?

ले०–डॉ. प्रेमचन्द श्रीधर, ई 36 रणजीत सिंह मार्ग आदर्श नगर, दिल्ली-33

आर्यसमाज अपने जीवन के 144 वर्ष पूर्ण कर रहा है। अतीत अत्यन्त गौरवपूर्ण था। उसे आर्य समाज का स्वर्णकाल कहें तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द से महात्मा गान्धी जिन्हें राष्ट्रपिता कहकर स्मरण करते हैं इतने प्रभावित थे कि बाद में स्वतन्त्रता संग्राम के लिए जितने कार्यक्रम बने उन पर आर्यसमाज की विचारधारा का प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है। वह आन्दोलन स्वराज्य, स्वभाषा, स्ववेशभूषा, स्वसंस्कृति और स्वदेशी का, कुछ भी हो, इन सब में जो 'स्व' शब्द जुड़ा वह आर्यसमाज की ही देन थी और आज भी है। स्वतन्त्रता के उन आन्दोलन में भाग लेने वाले बलिदानियों की पंक्तियों में भी आर्य समाज के लोग सबसे अधिक थे, इस तथ्य को सब स्वीकार करते हैं। प्रो. राणा प्रताप, राणा 'गन्नौरी' ने ऋणि के प्रति श्रद्धा भरे शब्दों में लिखा–

तूने मेरे स्वामी बड़ा उपकार किया है।
सोई हुई इस कौम को बेदार किया है।
जो तुझ को चमत्कार में विश्वास नहीं था।
लेकिन जो किया है वह चमत्कार किया है।।

महर्षि के अनुयायी आज लाखों में है, केवल भारत में ही नहीं, संसार के अन्य देशों में भी महर्षि का सन्देश पहुंच चुका है। इतने पुरोहित, प्रचारक और सन्यासी आर्यसमाज के कार्य में जुटे हुए हैं फिर भी सब के कार्य को जोड़ा जाए और पूरी ईमानदारी से उस कार्य की तुलना अकेले महर्षि के कार्य से करने का प्रयास किया जाए, यद्यपि तुलना करना कोई तर्क संगत बात प्रतीत नहीं होती, तो भी अभी तक उनके द्वारा किए गए कार्य का हम सब मिलकर भी अंशमात्र कार्य नहीं कर पाए।

तब आर्यसमाज की स्थापना को अभी 8 वर्ष ही व्यतीत हुए थे जब ऋषिवर की सांसारिक यात्रा ही समाप्त हो गई। परन्तु उसका प्रभाव कितना पड़ा, इस पर विचार करने लगें तो आश्चर्य मिश्रित आनन्द की अनुभूति होने लगती है। हम यहां महात्मा गान्धी के ही शब्दों को ज्यों का त्यों उदधृत कर रहे हैं–''महर्षि दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वह हिन्दोस्तान के आधुनिक ऋषियों, सुधारकों, श्रेष्ठ पुरुषों से एक थे उनका ब्रह्मचर्य, विचार स्वतन्त्रता–सर्वप्रति प्रेम, कार्यकुशलता आदि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत ही पड़ा है। मैं जैसे–जैसे प्रगति करता हूं वैसे–वैसे मुझे महर्षि जी का बताया मार्ग दिखाई देता है। ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पश्चात् जनता के साथ सीधा सम्पर्क रखने का मार्ग महर्षि दयानन्द ने खोज निकाला। इसका श्रेय महर्षि दयानन्द एवं उनकी आर्यसमाज को प्राप्त है। महर्षि दयानन्द तथा उनकी आर्यसमाज ने अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न किया है। राष्ट्रीय शिक्षण, स्त्री शिक्षण तथा दलितोद्धार आदि न भुलाई जा सके, जैसा राष्ट्र की महान सेवा की है। मुझे आर्यसमाज बहुत प्रिय है। महर्षि दयानन्द के इस पवित्र देशोपकारी कार्य का कभी भी अपमान होगा तो मैं उसको महापाप समझूंगा।''

हम कब तक केवल अपने अतीत के गुणगान करके अपनी वर्तमान की कमज़ोरियों और भविष्य की अत्यन्त भयावह दिखने वाली स्थितियों से आंख मूंदे रहेंगे? यह आज बोधोत्सव पर हमारे चिन्तन मनन का विषय होना चाहिए। यह बात हम आत्म–ग्लानि की अनुभूति से नहीं लिख रहे, आप इसे अन्यथा न लें। हम केवल आत्मालोचन के पक्ष में हैं। हमें कुछ क्षण चिन्ता में नहीं, अब आर्यसमाज के लिए चिन्तन के लिए निकालने की चाहिएं। तभी हमारे जीवन में भी कर्तव्य बोध हो सकता है और जो हमें एक आर्यसमाज के सदस्य के नाते, हितचिन्तक के नाते अथवा ऋषि के अनुयायी और वेद–प्रेमी होने के नाते करना चाहिए उसका शायद बोध हो जाए और बोधोत्सव हमारे लिए भी बोध रात्रि बन जाए। परन्तु अपने से परे सोचने की अब आदत ही नहीं रही तो चिन्तन कब करेंगे? ऐसे कई बोधोत्सव जीवन में आए, चले गए। हमने हर वर्ण की भान्ति कुछ भीड़ इकट्ठी की, कुछ सुना, कुछ सुनाया और वहीं फैंक कर चले आए। स्थिति तो ज्यों की त्यों रही। फिर वह जो अपेक्षित परिवर्तन में गुणोत्तर वृद्धि होनी चाहिए वह तो नहीं हो पा रही। यही चिन्ता और चिन्तन का विषय है। आर्यसमाज के तपस्वी, वक्ता स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती ने एक चेतावनी दी थी। यह चेतावनी आर्यसमाज खण्डवा की शताब्दी स्मारिका में छपी थी, हम उसकी ओर आपका ध्यान दिलाना चाहेंगे। स्वामी जी ने लिखा है–

''आर्यसमाज कल (बीते हुए) पर जितना गर्व करे, थोड़ा है। आज पर जितना लज्जित हो, थोड़ा है। कल (आने वाला) आर्यसमाज अपने मूल या वास्तविक रूप में होगा ही नहीं, केवल नाम शेष रह जाएगा।''

क्या हम मान लें कि स्वामी जी की चेतावनी में भविष्य स्पष्ट दिखाई दे रहा है। हृदय तो इस चेतावनी को पढ़कर न केवल स्वीकार कर रहा है अपितु कम्पायमान भी हो रहा है। इसी कारण हमने शीर्षक में लिखा है, जागोगे?

वैसे कोई गहरी नींद में सो रहा हो तो कन्धा हिलाकर ऐसा कहना ठीक भी लगता है परन्तु जागता हुआ केवल सोने का बहाना कर रहा हो उसे कैसा जगाया जा सकता है?

एक वो थे जिन्हें तस्वीर बनानी आती थी।
एक हम हैं लिया अपनी ही सूरत को बिगाड़।।

आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति को देखकर यही कहना पड़ता है। हमें ऐसे शब्दों का प्रयोग करके वेदना कितनी हो रही है, आपको उसका शायद विश्वास नहीं होगा।

आदिकाल से मनुष्य देख ही रहा था कि फल वृक्ष से नीचे गिरते हैं। परन्तु न्यूटन का देखना कुछ और था। वह घटना असाधारण हो गई, गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त का प्रतिपादन हुआ। आकाश में पक्षियों को कौन प्रतिदिन उड़ते हुए नहीं देखता परन्तु राईट बन्धुओं ने उसी से उड़ने की कल्पना को वायुयान का रूप देकर संसार का सारा चित्र ही बदल दिया। जेम्स वाट ने केवल पतीली के ढक्कन को भाप की शक्ति से ऊपर उठते हुए देखा था आज रेलगाड़ी कितनी गति से भाग रही है, यह जेम्स वाट के वैज्ञानिक बोध की घड़ी थी। सब देखते हैं रोगी को, वृद्ध को और शव को परन्तु राज कुमार सिद्धार्थ का देखना, उसे गौतम बना गया और फिर महात्मा बुद्धि के रूप में पूजनीय।

और अब आप शान्त चित्त होकर विचार कीजिए प्रतिदिन लाखों नर नारी क्या इस दृश्य को नहीं देखते कि जड़मूर्ति पर मूषक उछल कूद भी करते हैं और लगाए हुए भोग का भक्षण भी परन्तु क्षण मात्र को चित्त में बोध नहीं होता कि जड़मूर्ति ईश्वर नहीं हो सकती। विज्ञान के इस युग में भी सुपठित लोग उसी में ईश्वर आज भी मान रहे हैं। भोग अब भी लग ही रहा है। जबकि शिव और शव अर्थात् शिवरात्रि का जागरण तथा बहिन और चाचा की मृत्यु ने मूलशंकर को सच्चे शिव के बोध के लिए प्रेरित कर दिया। मूलशंकर दया और आनन्द का सागर बनकर सबको अमृत देकर स्वयं शंकर की भांति सारे गरल को पीकर अमर हो गये। स्वयं गरल पीकर गर्त में पड़े मां भारती के पुत्रों को गौरवान्वित होने का मार्ग दिखा गए।

एक हम हैं जो अपने को उनका शिष्य अनुयायी और आर्यसमाज का सदस्य व हितचिन्तक मानते हैं, हमें तनिक भी बोध नहीं हो रहा कि हम कर क्या रहे हैं? और करना क्या चाहिए? जा कहां रहे हैं? जाना किधर चाहिए? हमारा लक्ष्य क्या था? उसे प्राप्त करने की बजाए अपनी ही स्वार्थ सिद्धि में आर्यसमाज की सम्पूर्ण शक्ति और साधनों को स्वाहा कर रहे हैं। इससे अधिक लज्जित होने की कोई बात हो सकती है?

हमने आज से 11 वर्ष पूर्व एक लेख लगभग इसी शीर्षक से लिखा था, तब जितनी पीड़ा अनुभव होती थी आज उस पीड़ा में कमी नहीं आई, वृद्धि अवश्य हुई है। उस लेख का कुछ अंश यहां पुन: दे रहे हैं। हमने लिखा था-

''हमारा अभिप्राय आत्म चिन्तन में है, आर्यसमाज के कार्य के दृष्टि से आत्मचिन्तन। आर्यसमाज के सदस्य होने के नाते हमारा अपना क्या योगदान है? कहीं दूसरों की आलोचना और व्यर्थ की निन्दा में पड़कर हम स्वयं उसकी प्रगति में रोड़ा तो नहीं बन गए। कहीं हम आर्यसमाज को अपने अन्तर में छिपी स्वार्थ लिप्सा की पूर्ति का माध्यम तो नहीं बना रहे? किसी राजनैतिक, धार्मिक सामाजिक व अन्य प्रतिष्ठा के उच्चतम पद पर आरूढ़ होने की इच्छा और फिर अपने वर्चस्व से दूसरों पर झूठा रौब उत्पन्न करने की लालसा के हम शिकार तो नहीं बन रहे। शायद यही लालसा आर्यसमाज के कार्य को गति देने की बजाय व्यवधान बन गई है। क्या युवा पीढ़ी हमारे कार्य-कलाप से, व्यवहार शून्यता से, खिन्न होकर सत्य की दिशा में आने की बजाय उस ओर अपनी पीठ करके खड़ी तो नहीं हो गई? कहीं हमारी योजनाओं और उनके क्रियान्यवन में बड़ा रिक्त स्थान तो नहीं बन गया? इन सब प्रश्नों का उत्तर खोजने की आज आवश्यकता है। बोधोत्सव यही चेतना लेकर आया है।''

आगे हमने एक चेतावनी भी दी थी, उसे भी पुन: लिख रहे हैं:

''यथार्थ की जो भी अवहेलना करेगा वह कभी जीवन में आगे बढ़ने की आशा नहीं कर सकता।''

एक कठिनाई और आ रही है वह है सत्य कहने का साहस किया तो दूध से मक्खी की तरह निकाल कर फैंक दिए जाओगे। आह! कितनी बड़ी विडम्बना है, सत्य का प्रचार करने के लिए जिस आर्य समाज की स्थापना हुई उसमें सत्य को कहने का साहस करना कठिन हो पा रहा है। क्या अब झूठी चाटुकारिता का मुखौटा ही सत्य कहलाएगा? समझा जाएगा? जो दयानन्द को मात्र दुकान बनाकर आर्यसमाज को घोर पतन की ओर ले जा रहे हैं यह घोर पाप ही उनके लिए अभिशाप बनेगा। हमारे इन शब्दों को हो सके, तो नोट कर लें। कालचक्र तीव्रता से चल रहा है, व्यक्ति तो नहीं वक्त ही उन्हें पश्चाताप के लिए विवश करेगा।

श्री सत्यभूषण जी शान्त वेदालंकार, इनके नाम से मुझे लग रहा है, हमें गुरूकुल मुलतान में पढ़ाते थे, ऐसे गुरूओं के चरणों में वैदिक धर्म की शिक्षा मिली, कितनी ओजस्विता और प्रखर प्रेरणा का स्वर है उनकी कविता उठो आर्यों जागो! में-

महाविकट यह घड़ी आज, अब उठो, आर्यों जागो,
आया काल परीक्षा का मत संघर्षों से भागो।
जीवन नाम नहीं सोने का जागृति ही जीवन है,
जलना नहीं अगर जीवन में, सूना जीवन-वन है।।

आर्यसमाज के लिए तीव्रता से बदलती हुई परिस्थितियों में नई-नई चुनौतियां सामने मुंह बाए खड़ी हैं। आर्यसमाज के पास ज्ञान है, सत्य है, शक्ति है, जागरूक दृष्टिकोण भी है। सब कुछ होते हुए भी चुनौतियों के समाधान के लिए बार-बार गले-सड़े भ्रष्ट चरित्रहीन, दिशाहीन, सत्ता के मद में चूर जिनकी बुद्धि खो चुकी है, जिन्हें भारत माता से कुछ लेना देना नहीं है, सत्ता का भोग ही जिनके लिए जीवन का अन्तिम सत्य है, ऐसे लोगों की ओर आशा भरी दृष्टि को देख रहे हैं, आर्यसमाज के लोग। जिन्हें अपने ही मार्ग का पता नहीं वे हमारा क्या मार्ग दर्शन करेंगे? जिनका शरीर तो है आत्मा मर चुकी है। हमें लगता है यमराज को भी शायद कुर्सी के नीचे छिपी हुई उनकी आत्मा मिलेगी, वे देश की, धर्म की, संस्कृति की समस्याओं का समाधान करेंगे या आप। वे तो स्वयं अपने लिए और

(शेष पृष्ठ 23 पर)

शिवरात्री का पर्व

ले.-श्री देवी दयाल शर्मा, शर्मा निवास, 120 माडल टाऊन, अमृतसर

हर वर्ष, शिवरात्री का परम पावन पर्व, भारत के कोने-कोने में बड़ी श्रद्धा और धूमधाम से मनाया जाता है। यह वह पर्व है जिसने मूलशंकर को महर्षि दयानन्द बना दिया। टंकारा ग्राम में जो गुजरात प्रांत में है (जिसे मुझे देखने का अवसर प्राप्त हुआ) एक छोटा सा शिव मंदिर है। इस पर्व पर पुजारी लोग इस मंदिर में 1000 वाट के बल्व (Bulbs) जलाया करते हैं ताकि मन्दिर अच्छी तरह जगमगा जाए और शिव भक्तों को प्रकाश मिले। अपने पिता की आज्ञा पालन करते हुए मूलशंकर भी इस मंदिर में पधारे परन्तु इतनी बड़ी रोशनी होते हुए भी, उनको अन्धकार अनुभव हो रहा था। इस अन्धकार को मिटाने के लिये उन्होंने अपना सारा जीवन न्यौछावर कर दिया। कोई मुसीबत बाकी नहीं रह गई थी जो उन्होंने अपने शरीर पर न झेली हो। वह एक अच्छे अमीर घर में पैदा हुए थे, उन को क्या मुसीबत पड़ी थी, घर के ठाठ-बाठ छोड़ने की और अतीव दु:ख सहने की। परन्तु वह प्राणिमात्र का कल्याण हर समय चाहते थे और उस कल्याण को लोगों में बांटने के लिये अपना सारा जीवन इसी तरफ लगा दिया। मन का अन्धकार बाहर के अन्धकार से ज्यादा खतरनाक हुआ करता है। यह न तो लौकिक सुखों को भोगने देता और न ही पारलौकिक सुखों का द्योतक है। दिन रात दयानन्द को यही चिन्ता लगी रहती थी कि लोगों का मानसिक अन्धकार कैसे दूर किया जाए। नमनीय गुरू विरजानन्द की पाठशाला में स्नातक बन करके निकले और गुरूवर की आज्ञा पालन करने के लिये सिरधड़ की बाज़ी लगा दी और एक पूर्ण धार्मिक सन्यासी की हैसियत से, वह मैदान में निकले। वेदों की विद्या का प्रकाश न केवल भारत के कोने-कोने में फैलाया बल्कि विदेशों में भी वेद ज्ञान का संदेश पहुंचाया और संसार को इस परम पवित्र ज्ञान से आलौकित किया। ऐसे महान ऋषि को हमारा कोटिश: बार प्रणाम हो। उन्होंने किसी नए मत को चलाने का प्रयास नहीं किया परन्तु जो वेद ज्ञान परमात्मा ने सृष्टि के आरम्भ में चार ऋषियों को दिया था और जो बाद में लुप्त हो गया, उसको ही पुनर्जीवित किया। फिर वेदों का सार, जो उसका अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश है, उस का निर्माण किया।

उन्होंने कहा कि जो कोई त्रुटि इस ग्रन्थ में किसी को नज़र आती है वह मेरी है और जो सच्चाई है, वह वेद ज्ञान है। ऋषियों को बताए हुए पांच यज्ञों का (ब्रह्म यज्ञ, देवयज्ञ, भूतयज्ञ, नृयज्ञ और पितृयज्ञ) का जो नित्यप्रति अनुष्ठान करता है, परमात्मा, यज्ञकर्ता के लिये मुक्ति के द्वार खोल देता है। मनुस्मृति का भी हवाला दिया-

ऋषि यज्ञ, देवयज्ञं, भूतयज्ञं च सर्वदा। नृयज्ञं, पितृयज्ञं च यथा शक्ति न हापयेत।।4/21

मनु महाराज ने भी इस पर बल दिया है कि ऋषि यज्ञ, हवनयज्ञ, भूतयज्ञ, अतिथि यज्ञ और पितृयज्ञ मानव को नित्यप्रति, यथा शक्ति करने ही चाहियें इस शुभ कार्य में नागा नहीं करना चाहिये। लिखने को तो बहुत कुछ है परन्तु समय अभाव और स्थान अभाव के कारण ज्यादा लिखने में संकोच प्रकट करता हूं।

महर्षि की आज्ञा पालन करने वाले मुश्किल से दस प्रतिशत (10 Percent) ही मिलेंगे। हमारी सच्ची श्रद्धांजलि ऋषि के चरणों में तब ही स्वीकार होगी जब हम वेद पथ के पथिक बनेंगे और उन के उपदेशों को हृदयगंम करेंगे। इस परम पावन पर्व पर हम सब भाई, बहन व्रत धारण करें कि हम हवनयज्ञ किये बगैर, भोजन नहीं करेंगे। इस अति पवित्र शुभकर्म से हमारा इतना कल्याण होगा कि वर्णन नहीं किया जा सकता। जब हमारे आर्य परिवारों में इस कर्म का आरम्भ हो गया तो मानों राम राज्य स्थापित हो गया। राम राज्य की एक यह बड़ी भारी विशेषता थी कि हर घर में हवनयज्ञ का नित्यप्रति अनुष्ठान होता था और जिस घर से हवन की सुगन्धि बाहर नहीं निकलती थी, लोग समझते थे कि उस घर में कोई बदशगुनि हो गई होगी। महर्षि दयानन्द जी महाराज ने यह शब्द बलपूर्वक लिखे कि हवन यज्ञ करने से लाखों आदमियों का उपकार होता है और इस शुभ कर्म के न करने से जितना वातावरण दूषित होता है और दूषणता के कारण जितना रोग बढ़ता है और रोग के बढ़ने से जितना दु:ख लोगों को झेलना पड़ता है उतना पाप एक गृहस्थ को लगता है, इस के निवारण अर्थ, हवन यज्ञ का करना अनिवार्य है। गीता भी पुकार-पुकार कर कह रही है कि जो यज्ञ किये बगैर भोजन करता है, वह पाप खाता है और वह असली चोर है।

स्त्री जाति के कल्याण के लिये महर्षि इतना कुछ कर गये कि वर्णन नहीं किया जा सकता जिसके लिये स्त्री जाति हमेशा के लिये महर्षि की ऋणी रहेगी। मैंने महर्षि के चरणों में श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कुछ शब्द पद्यरूप में नीचे लिखे हैं-

स्त्री जाति का अपमान कर रहे थे बेसमझ।
कोई समझाने वाला न था इन मूर्खों को अकलमन्द।
पैर की जूती समझ बैठे थे अनजाने।
बन के रहबर इनको पार लगा दिया ठिकाने।।
विद्या पढ़ने का इन्हें अधिकार दिया, गुरूमन्त्र जपने का पैगाम दिया क्या कुछ कर गया, यह नहीं पता, जादू का काम कर गया।
इस देश की बिगड़ी हालत को संवार गया।
भूले भटकों को ठीक मार्ग पर चला गया।
ब्रह्मचर्य एवं मातृवत परदारेषु का संदेश सुना गया।
वेदों का डंका बजा गया, एक ईश्वर की पूजा सिखा गया
तेरे ऋण से हम उऋण न हो सकेंगे ए ऋषि
लाख यत्न करें फिर भी रहेंगे ऋणी के ऋणी।।

महर्षि दयानन्द सरस्वर्ती

ले.-श्री सत्यदेव 'विद्याव्रत' जी

हमारी भारत माता की कोख से अनेक वीर उत्पन्न हुए हैं और होते रहेंगे। गुणिगणगणारम्भे न पतति कठिनी संसभ्रमाद् यस्य। तेनाम्बा यदि सृतिनी वद वन्ध्या कीदृशी भवति।। के अनुसार विश्व की अंगुली इस माता के सपूतों पर ही गिरती है, अत: इसे सच्ची जननी कहलाने का अधिकार प्राप्त है। इसने ऐसे-ऐसे पुत्रों को जन्म दिया है कि संसार आश्चर्य में पड़ गया।

विक्रम सम्वत् 1881 फाल्गुण कृष्णा दशमी, शनिवार को ब्रह्म मूहूर्त में माता अमृतबाई की कोख से सौराष्ट्र भूमि के मोरवी राज्यान्तर्गत टंकारा नगर के जीनापुर मुहल्ले के निवासी औदीच्य सामवेदी ब्राह्मण श्री कर्षण लाल जी के घर में एक तेजस्वी बालक का जन्म हुआ। मूल नक्षत्र में उत्पन्न होने के कारण बालक का नाम मूलशंकर रखा गया, किन्तु प्रेम के कारण उन्हें 'दयाराम' के नाम से भी पुकारते थे।

मूलशंकर जी के पिता कर विभाग के अधिकारी थे। घर धन-धान्य से परिपूर्ण था। प्रथम संतान का जन्म हुआ देखकर सभी सज्जनों को प्रसन्नता हुई। बालक शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा की भांति बढ़ने लगा। पांच वर्ष की अवस्था में कुलरीति के अनुसार पिता ने बालक का विद्यारम्भ संस्कार कराया। हिन्दी एवं गुजराती वर्णमाला सिखाने के पश्चात् पिता ने उच्च भावनाओं को अपने अन्दर रखकर बालक को बहुत से श्लोक एवं सूत्र कण्ठस्थ कराए। आठ वर्ष की आयु में पिता ने उपनयन संस्कार कराके मूलशंकर को अपने छोटे भाई के पास यजुर्वेद का रुद्राध्याय पढ़ाने के लिए भेजा। बालक की बुद्धि तेज देखकर एक दूसरे विद्वान् से उन्हें शब्दरूपावली, धातुरूपावली एवं संस्कृत के अन्यान्य ग्रंथ भी पढ़वाने लगे। मेधावी शिष्य को देखकर गुरु का हृदय प्रसन्न हो उठता है। ठीक इसी प्रकार मूलशंकर जैसे बुद्धिमान् छात्र को प्राप्त करके सब अध्यापक खुश होते थे और बहुत प्रेम से उसे पढ़ाते थे। समय बीतते देर नहीं लगती। बालक मूलशंकर अब चौदह वर्ष के हो गए थे। पास में ही शिवरात्रि का पर्व आया हुआ था। पिता जी शंकर की कहानी बालक को सुनाते, जो उसके हृदय में कौतूहल उत्पन्न करती थी। माता के निषेध करने पर भी पिता जी ने मूलशंकर को स्वर्गादि का प्रलोभन दिलाकर शिवरात्रि का उपवास रखने को कहा। बालक जिज्ञासु था। उसने भी अपने पिता के साथ मन्दिर में उपवास रखा। वहां अन्य लोग भी उपस्थित थे। रात्रि के तृतीय पहर में सभी सोने लगे, तो बालक मूलशंकर ने आंखों पर जल छिड़क कर अपनी नींद भगाई। बालक केवल यह देखता चाहता था कि भगवान् शंकर कैसे हैं?

थोड़ी देर में ही देखते क्या हैं कि एक चूहा आकर शिवलिंग पर चढ़कर प्रसाद खा रहा है और इधर-उधर कूद रहा है। यह घटना देखकर बालक को आश्चर्य हुआ कि 'ये शंकर कैसे हैं, जो चूहे को भी अपने ऊपर से नहीं उतार सकते? मैंने तो सुना था कि वे दुष्टों को दण्ड देते हैं। चूहा इनके ऊपर कूद रहा है, इनके भोज्य पदार्थ का सेवन कर रहा है तब भी ये कुछ नहीं करते, आश्चर्य है!' बालक देखते-देखते परेशान हो गया। उसने अपने पिता को जगाया और पूछा कि 'क्या ये ही वे शंकर हैं जिनकी कथा पुराणों में आती है?' पिता ऐसी बातें अपने पुत्र के मुख से सुनकर क्रोध आया और उन्होंने उपेक्षापूर्ण शब्दों में कहा कि 'तू व्यर्थ के प्रश्न करता है। भगवान् शंकर तो कैलाश पर्वत पर रहते हैं और हम लोग तो शिव मूर्ति में प्राण-प्रतिष्ठा करके उसकी पूजा करते हैं।' यह उत्तर सुनकर बालक के हृदय को आघात पहुंचा। वह सोचने लगा कि 'देखो! संसार के मनुष्य कितने अबोध है।' उसका मन वहां से जाने को चाहा और उसने पिता जी से अनुमति लेकर घर आकर माता जी को जगाकर भोजन कर लिया और निद्रा देवी की गोद में चला गया।

सत्य की एक छोटी-सी चिंगारी असत्य के महान् पर्वत को भी भस्म कर देती है। बालक मूलशंकर ने पूर्ण निश्चय कर लिया था कि अब से आगे कभी ऐसा उपवास नहीं रखूंगा। प्रात: ही पिता जी आए। भोजन की बात सुन कर बहुत कुपित हुए। किन्तु पुत्र ने सीधा कह दिया कि 'जो भगवान् कैलाश पर्वत पर रहते हैं, उनकी यहां पूजा करना ठीक नहीं।' माता जी ने भी 'बालक अबोध है' कहकर पिता जी का क्रोध शान्त करवाया।

दिन बीतते गए, परन्तु मूलशंकर की शिवदर्शन की इच्छा तृप्त न हुई। अभी 16 वर्ष के ही थे कि छोटी बहन हैजे से मर गई। सब घर वाले रोये, किन्तु मूलशंकर की आंखों से एक भी बूंद आंसू न निकला। वह स्तम्भ का सहारा लेकर यही सोच रहा था कि मृत्यु क्या चीज है, जिससे आज मेरी बहन मुझे बिछुड़ रही है?

मूलशंकर ने अब तक बहुत कुछ पढ़ लिया था। उन्हें संसार में आए अब उन्नीस वर्ष हो चुके थे। शरीर तेज से दीप्त था। यौवन चढ़ता जा रहा था। सहसैव उनके प्रिय चाचा को भी हैजा हुआ। उन्होंने चारपाई पर लेटे ही बालक को बुलाया। कुछ कहा नहीं, अपितु रोने लगे। इस दृश्य को देख कर मूलशंकर भी फूट-फूट कर रोने लगे। महाकाल ने सबके देखते-देखते चाचा के प्राण ले

लिए। अपने चाचा को मृत्युशय्या पर पड़े देख कर मूलशंकर के मन में तीव्र वैराग्य उत्पन्न हो गया। शिवरात्रि के पर्व से तो वैराग्य का दीपक जल ही रहा था, अब वह तीव्र गति से जल उठा। वह सभी से पूछता कि 'मृत्यु से कैसे बच सकते हैं?' सभी का उत्तर था उस भगवान् को पा लेने से मृत्यु सागर से पार हो सकते हैं।'

बालक ने माता-पिता से काशी जाकर पढ़ने की इच्छा प्रकट की। किन्तु माता ने प्रेमवश न जाने दिया। पिता को भी पता चल गया था कि मेरा पुत्र सबसे मृत्यु जीतने और शिव के दर्शन का मार्ग पूछता है। अत: उन्होंने बालक की शादी करने का विचार किया। लड़की देख ली गई। जब मूलशंकर को पता चला कि 'ये मुझे संसार के बन्धन में बांधने की सोच रहे हैं, तभी बाईस वर्ष की अवस्था में ज्येष्ठ मास की सायंकालीन वेला में 'घर पर कभी नहीं लौटूंगा' यह प्रतिज्ञा करके सत्य के मार्ग का पथिक बन चला।

एक यतिवय ने मूलशंकर का नाम बदल कर शुद्ध चैतन्य रखा और ब्रह्मचर्यव्रत के दण्ड, कमण्डल और काषाय वस्त्र धारण कराए। 'अग्निकृतं सुकृतिन: परिपालयन्ति' इस लोकोक्ति के अनुसार शुद्ध चैतन्य घर से निकल सिद्धपुर के मेले में एक भेदिये द्वारा अपने पिता जी से पकड़े जाने पर भी घर न आए और वहां ही रात्रि में सिपाहियों की दृष्टि बचाकर निकल पड़े।

आगे चल कर स्वामी पूर्णानन्दजी सरस्वती से संन्यास की दीक्षा ली और उन्होंने इनका नाम शुद्ध चैतन्य से स्वामी दयानन्द सरस्वती रख दिया। इन्होंने पढ़ने की भी अपनी इच्छा प्रकट की तो उन्होंने उत्तर दिया कि अब हम बहुत वृद्ध हो चुके हैं, अत: पढ़ाने में असमर्थ हैं। यदि आपकी पढ़ने की उत्कण्ठा है तो हमारे शिष्य स्वामी विरजानन्द आपकी इच्छापूर्ति करेंगे।

संन्यास दीक्षा देने के बाद स्वामी दयानन्द जी पांच वर्ष तक इधर-उधर योगियों की खोज में घूमें। जंगलों की खाक छानी, पर्वतों की गुफाएं खोज डाली, किन्तु कहीं कुछ न मिला। फिर चाणोद में शिवानन्द गिरि और ज्वालानन्दपुरी नामक दो योगी मिले। उन्होंने अहमदाबाद में स्त्रोतस्विनी तट पर दुग्धेश्वर महादेव में मिलने को कहा। स्वामी जी ने उनसे योग सीखा और स्वयं ही लिखा है कि 'वहां उन्होंने अपना प्रण पूरा किया। अपने कथनानुसार मुझे कृतकृत्य कर दिया। इन्हीं महात्माओं के प्रभाव से मुझे क्रिया समेत योग विद्या भलीभांति विदित हो गई। अत: मैं इनका अत्यन्त आभारी हूं। वास्तव में उन्होंने मुझ पर महान् उपकार किया।'

इन वाक्यों से पता चलता है कि स्वामी दयानन्द जी ने पांच वर्ष तक योग विद्या का अभ्यास किया। कुछ दिन तक अलखनन्दा की यात्रा की और तदनन्तर इधर-उधर बहुत दिनों तक भ्रमण किया।

स्वामी दयानन्द जी ने देश का भ्रमण करके देख लिया था कि इस देश की राजनैतिक अवस्था ठीक नहीं। उन्हें स्वामी विरजानन्द की याद आई। वे मथुरा की तरफ चल पड़े। वहां आकर रंगेश्वर मन्दिर में रुके। सम्वत् 1917 के प्रारम्भ में उन्होंने दण्डी स्वामी विरजानन्द जी की कुटिया का द्वारा खटखटाया। अन्दर से आवाज आई 'कौन है?' स्वामी दयानन्द जी ने नम्र शब्दों में कहा 'भगवान्! यही जानने आया हूं।' दण्डी जी को आश्चर्य हुआ और उन्होंने समझ लिया कि अब मेरा मनोरथ पूर्ण हो जाएगा। फिर पूछा 'कुछ पढ़े भी हो?' दयानन्द जी ने सब सत्य-सत्य बतला दिया। गुरु जी का आदेश हुआ 'अच्छा यदि हमारे पास पढ़ना है तो जो कुछ पढ़े हो, उसे भूल जाओ और जो पुस्तकें लिए हो, उन्हें यमुना में फेंक आओ, क्योंकि ये अनार्ष हैं। गुरु के आदेशानुसार उन्होंने वही किया। यति होने कारण स्वामी विरजानन्द जी के आश्रम में उनके भोजनादि की व्यवस्था न हो सकती थी। अमर लाल नाम के गुजराती औदीच्य ब्राह्मण भक्त स्वामी जी से प्रभावित हो गए और उन्होंने विद्या प्राप्ति तक उनके भोजन की व्यवस्था कर दी। वह इतना श्रद्धालु था कि स्वामी जी को भोजन कराके ही स्वयं भोजन करता था। दो रुपये मासिक हरदेव सहाय जी दुग्धार्थ एवं चार आना श्री गोवर्धन जी रात को पढ़ने के लिए तैलार्थ देते थे। भगवान् सबकी सहायता करते हैं। वे लक्ष्मी नारायण के मन्दिर में यमुना के तट के पास रहने लगे।

'गुरोर्विद्या यस्मिन् फलति स हि शिष्य प्रियतम:' के अनुसार स्वामी विरजानन्द जी प्रिय एवं मेधावी शिष्य दयानन्द को प्राप्त करके बहुत प्रसन्न हुए। दयानन्द जी नियमित रूप से विद्याध्ययन के लिए आने लगे। वे चाहते थे कि गुरु जी के पास जितना ज्ञान है, वह सब संचित कर लूं और दण्डी जी यह सोचते थे कि मेरे पास जो कुछ भी है, वह सब दयानन्द को सिखला दूं।

गुरु विरजानन्द जी से अष्टाध्यायी और महाभाष्य पढ़ने के बाद अब उनका समावर्तनकाल उपस्थित हो गया। उन्होंने गुरु जी की प्रिय वस्तु लौंग भेंट की। किन्तु गुरु जी ने उनसे दूसरा ही कुछ मांग लिया। वे बोले-'वत्स! मुझे किसी चीज की जरूरत नहीं। मैं तो केवल यह चाहता हूं कि संसार में वेद विद्या और आर्ष ग्रंथों का जीवन भर प्रचार करो।' सुनते ही ऋषि का हृदय गद्-गद् हो गया। उन्होंने गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके चलने की अनुमति मांगी।

ऋषि दयानन्द ने सारा जीवन वेदों के प्रचार में लगा दिया। जगह-जगह शास्त्रार्थ करके वैदिकता का स्थापन किया, गुरुकुल खुलवाए, वैक्रमाब्द 1932 चैत्र सुदी प्रतिपदा को, सायं साढ़े पांच बजे, चिरगांव में चिकित्सक श्री मणिकचन्द्र की वाटिका (बम्बई नगर) में सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना की इसके बाद अन्यत्र भी बहुत स्थलों पर आर्यसमाज की स्थापना की गई। अपने जीवन में बहुत से ग्रंथ लिखे जिनमें सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

(शेष पृष्ठ 23 पर)

ऋषि का चमत्कार

ले.-स्व० श्री पं० चमूपति जी एम.ए. आर्य सेवक

मूर्खों में धर्म का आधार चमत्कार होता है। ऐसा होना स्वभाविक है। धर्म इन्द्रिय ग्राह्य जगत् से ऊपर की ओर संकेत करता है। धर्म के मुख्य विषय आत्मा और परमात्मा हैं। कई मतों ने तो प्रकृति की सत्ता को ही स्वीकार नहीं किया। कईयों ने उसे क्षणभंगुर मान कर कोई विशेष मान की वस्तु नहीं रहने दिया। साधारण बुद्धि को भौतिक संसार से परे ले जाने के लिए अलौकिक चमत्कार दिखाने की आवश्यकता है। कोई परमात्मा को क्यों माने? संसार के काम तो बिना परमात्मा के भी चलते प्रतीत हो ही रहे हैं। यदि मनुष्य किसी प्रकार भी सृष्टि नियम के बन्धन से मुक्त नहीं हो सका, तो इस नियम के ऊपर कोई नियामक है, यह मानना या न मानना बराबर है।

जब-जब कोई नए मत का प्रवर्तक आया, उससे चमत्कार मांगा गया। परमात्मा से इस पुरुष का विशेष सम्बन्ध है, इसका क्या प्रमाण? जो यह कहता है, वह परमात्मा की आज्ञा है-इसमें युक्ति?

तमाशा यह है कि प्राय: धर्म के प्रवर्तकों ने आरम्भ में चमत्कार दिखाने से इन्कार किया है। धर्म के प्रवर्तक जादूगर नहीं थे। वह मनुष्यों के लौकिक व्यवहारों का सुधार करना चाहते थे। उनके लिए संसार की रचना से बढ़ कर और चमत्कार न था। वह मनुष्य थे और मनुष्य रह कर ही मानव जाति का सुधार करना चाहते थे।

प्रभु ईसा से कहा गया चमत्कार दिखाओ मार्क की इंजील में आया है-

और फरीजी बाहर आए और उस (ईसा) से युक्ति प्रयुक्ति करने लगे। उनकी इच्छा थी कि उस से कोई आसमानी (अलौकिक) चमत्कार देखें। वह उसे प्रलोभन में डालते थे।

और उसने अपनी आत्मा में ठंडा सांस लिया और कहा, यह पीढ़ी चमत्कार क्यों देखना चाहती है? मैं तुम्हें सच कहता हूं, इस पीढ़ी को चमत्कार नहीं दिखाया जायेगा।

वह उसे प्रलोभन में डालना चाहते थे। यह शब्द विशेष ध्यान देने योग्य हैं। योगदर्शन में कई विभूतियों का वर्णन आया है। परन्तु दर्शनकार की स्पष्ट आज्ञा यह है कि यह विभूतियां आत्म विकास का फल है' यदि इन की प्रदर्शनी की जाए, तो आत्म-विकास रुक जाता है।

योगदर्शन की विभूतियां किसी पैगम्बर विशेष को नहीं मिलती, किन्तु जो भी पद्धति के अनुसार योग का साधन करता है, उसमें वह शक्तियां स्वयमेव पैदा हो जाती हैं। ऐसा होना सृष्टि के नियम के अन्तर्गत है।

कच्चे लोगों का प्रलोभन होता है कि अपने आत्म-विकास की प्रदर्शनी करें। इसी प्रलोभन की ओर मार्क ने संकेत किया है। महामुनि पतंजलि के नियमों का संस्कार अन्यदेशीय लेखकों के हृदयों में भी था-यह स्पष्ट है।

उपरोक्त घटना का वर्णन मैथ्यू ने भी किया है। उसमें प्रलोभन की संभावना नहीं उठाई गई। फरिजियों का आग्रह वही है उसी के उत्तर में प्रभु कहते हैं-

''दुष्ट और व्यभिचारी पीढ़ी चमत्कार चाहती है। इसे चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा, सिवाय भविष्यवक्ता जोनास के चमत्कार के। (12.30)''

''क्योंकि जैसे जोनास 3 दिन और तीन रातें व्हेल मच्छी के पेट में रहा था, वैसे ही पुरुष पुत्र तीन दिन और तीन रातें पृथ्वी के हृदय (पेट) में रहेगा।''

(12.40)

चमत्कार दिखाने से इन्कार दोनों वृत्तान्तों में समान है। मैथ्यू के कथनानुसार प्रभु ने एक चमत्कार की आशा दिलाई, और वह था प्रभु का तीन दिन और तीन रात पृथ्वी के पेट में रहना। यह संकेत है प्रभु ईसा के सूली चढ़ने के पीछे तीन दिन दबे रहने और इसके पश्चात् भूमि के गर्भ से निकल आने की ओर ईसाई प्रभु ईसा के पुनर्जीवित होने की कथा ऐसे ही मानते हैं। इसकी समीक्षा हम आगे चल कर करेंगे। यहां इतना निर्विवाद सिद्ध है कि ईसा इस एक चमत्कार के अतिरिक्त जो उनकी मृत्यु के पश्चात् होना है और कोई अलौकिक चिन्ह दिखाने से इन्कार करते हैं। यही नहीं, वह चमत्कार मांगने वालों को दुष्ट और व्यभिचारी भी कहते हैं।

रहा जोनास का उदाहरण। उस पर संत ल्यूक का कथन सुनिए-

''वह (ईसा) कहने लगा, यह दुष्ट पीढ़ी है कि चमत्कार चाहती है। इसे कोई चमत्कार न दिखाया जायेगा सिवाए भविष्यवक्ता जोनास के चमत्कार के।'' (11-29)

''क्योंकि जैसे निनवा के लोगों के लिए जोनास एक चिन्ह था, वैसे ही पुरुष-पुत्र इस पीढ़ी के लिए चमत्कार होगा। (11-30)

यहां न मछली के पेट की कथा है न भूमि के गर्भ की। इजीलों का आपस का वृत्तान्त-भेद बता रहा है कि इंजीलों का अक्षर 2 सत्य मानने की आवश्यकता नहीं। चमत्कार जैसे विषय पर, जो इंजील-लेखकों को अत्यन्त प्रिय है, दो लेखकों का मौन धारण करना और केवल एक का बेपर की उड़ान बता रहा है कि चमत्कार में कोई जान नहीं। प्रभु ईसा का कथन साहित्य के नियमानुसार सुन्दर है। उसमें व्यंग्य है। हमें ल्यूक और मार्क के वृत्तान्तों में कोई भेद नहीं जान पड़ता। एक जगह कहा है-चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा। दूसरी जगह चमत्कार मांगने वालों को दुष्ट कहा है। एक

स्थान पर चमत्कार का वचन दिया है-वह यों कि जोनास निनेवा के लोगों के लिए चमत्कार था, वैसा मैं (ईसा) तुम्हारे लिए दूंगा। जोनास एक सुधारक था। सुधारक सब चमत्कारी होते हैं। जगत् एक ओर जाता है यह दूसरी ओर। इनका रहन सहन, भोजन छादन, स्वप्न जागरण, सब विलक्षण होता है। श्री कृष्ण ने कहा ही है-

या निशा सर्व भूतानां तस्यां जागर्तिसंयमी।
यस्यां जागृति भूतानि सा निशा पश्यतो मुने:।।

साहित्य की रीति से यह कथन चमत्कार दिखाने से इन्कार करने का एक चमत्कार युक्त ढंग है और यदि ल्यूक और मैथ्यू को आगे पढ़ा जाए, तो स्पष्ट प्रतीत होता है कि वास्तव में जोनास का चमत्कार उसका धर्म प्रचार था। यथा-

''निनेवा के लोग इस पीढ़ी के साथ न्याय में उठेंगे और इसे फटकारेंगे। क्योंकि वह जोनास के उपदेश से पछताए थे और जोनास से भी महान् व्यक्ति इस समय यहां हैं।''

(ल्यूक 11,32, मैथ्यू 12.41)

दोनों के शब्द एक ही हैं। मैथ्यू को स्वयं प्रचार कोई चमत्कार प्रतीत नहीं हुआ। साहित्य की व्यंग्योक्ति उसे आती ही नहीं, इसलिए मछली और भूमि के पेटों की कल्पित तुलना कर दी है। हमें इस सारे वृत्तांत में मछली और भूमि का पेट क्षेपक प्रतीत होते हैं। इस तुलना का न पीछे से जोड़ है न आगे से।

यदि चमत्कार मांगना दुष्टता है तो इस मांग को पूरा करना कहां की बुद्धिमत्ता है? बात यह है कि प्रभु ईसा को चमत्कारों में विश्वास न था।

अब जरा श्रीमान् मुहम्मद महोदय की बात भी लो। जब इन्होंने मक्के में धर्मप्रचार का बीड़ा उठाया तो इनसे भी चमत्कार मांगा गया। इनकी ओर से उत्तर परमात्मा ने दिया।

कुरान में आया है-

''और वे कहते हैं, परमात्मा की ओर से उस (मुहम्मद) पर चमत्कार क्यों नहीं उतरते। कह, चमत्कार परमात्मा के पास हैं और मैं एक सीधा सादा चेतावनी देने वाला हूं।'' (कुरान 29-50)

''क्या यह उनके लिए पर्याप्त नहीं कि हमने तुझे पुस्तक दिया है, जो उन्हें सुनाया जाता है। निश्चय इसमें दया है और श्रद्धालुओं के लिए चेतावनी है।'' (कुरान 29-50)

श्री मुहम्मद महोदय का चमत्कार दिखाने से इन्कार महामना ईसा के इन्कार से भी अधिक स्पष्ट है। इसमें सन्देह नहीं कि कुरान का यह अध्याय मक्का में उतरा था अर्थात् मुहम्मद महोदय के प्रचार के आरम्भिक दिनों में।

यही बात श्री गुरुनानक के जीवन में पाई जाती है विस्तारभय से हम उससे उद्धरण नहीं देते।

अचम्भा यह है कि जिस काम के करने से यह महामना सुधारक लोग अपने प्रचार के लिए आदिम काल में इन्कार करते हैं, वही कार्य समय बीतने पर स्वयं करने लग पड़ते हैं। इसमें दो सम्भावनाएं हो सकती हैं। एक यह कि समय उन्हें अधिक बुद्धिमान् बना देता है। अपने मत का एक बड़ा बखेड़ा सा खड़ा कर लेने से उन्हें सच की उतनी लगन नहीं रहती जितनी अपने मत की संस्था चलाने की। दुर्जनतोष न्याय से इन्हें झूठ-मूठ के चमत्कार दिखाने ही पड़ते हैं। जिन्हें उनका अपना हृदय साधारण बात मानता है, उन्हीं बातों को सामान्य लोगों को अपने साथ रखने के लिए अलौकिक चमत्कार बना कर दर्शा छोड़ते हैं। या यह महापुरुष तो अपना समय जैसे तैसे काट लेते हैं, परन्तु उनके अनुयायी दम नहीं लेते, जब तक अपने मत के प्रवर्त्तक को संसार से भिन्न कोई देव शक्ति सिद्ध न कर लें। महापुरुषों के जीते जी उनका अपना महत्त्व ही उनका महान् चमत्कार होता है। परन्तु अनुयायियों में वह महत्त्व तो पाया ही नहीं जाता है। हां मर चुके महापुरुष के जीवन पर अलौकिक घटनाओं के गिलाफ चढ़ाऐं जाते हैं जिससे उसकी मानुषीय महत्ता का नाश होकर भ्रमोत्पादक दैवी कथा शेष रह जाती है।

कुछ भी हो, मार्क के उपरलिखित शब्दों की स्याही अभी सूखी न होगी कि ईसा के चमत्कारों का वर्णन आरम्भ हो जाता है। यथा-

''और (चमत्कार दिखाने से इन्कार करने से पीछे) वह उनसे चला गया और जहाज़ में बैठ कर पुन: दूसरी ओर प्रस्थान किया।'' (8-13)

''अब शिष्यों को रोटी लेना भूल गई थी। और जहाज में उनके पास एक रोटी से अधिक न थी।'' (8-14)

''और उसने उन्हें आज्ञा दी, देखो, फरीजियों के खमीर से और हरेड़ के खमीर से बचे रहो।'' (8-15)

''और उन्होंने आपस में बाद किया, यह इसलिए कहा है कि हमारे पास रोटी नहीं।'' (8-16)

''और जब ईसा को पता लगा, उसने उनसे कहा, रोटी न होने के कारण का क्यों अनुमान करते हो? क्या तुम देखते नहीं? समझते नहीं। क्या तुम्हारे हृदय कठोर हो गए हैं?'' (8-18)

''जब मैंने 5 रोटियां पांच सहस्त्र मनुष्यों में बांटी थी? तुमने टुकड़ों की कितनी रोटियां उठाई थी? वह बोले-बारह।'' (8-19)

यही घटना मेथ्यू ने वर्णन की है और अन्त में कहा है-

''यह क्या बात है कि तुम समझते नहीं कि मैंने तुम्हें रोटी के सम्बन्ध में यह आज्ञी नहीं दी कि तुम फरीजियों और सड्डूसियों के खमीर से बचो।

तब वह समझे कि उस (ईसा) की आज्ञा रोटी के खमीर के विषय में न थी, किन्तु फरीजियों और सड्डूसियों के सिद्धान्तों के सम्बन्ध में थी।

(16-11 व-12)

पाठकों ने देख लिया कि यहां खमीर से अभिप्राय आटे के खमीर से नहीं, किन्तु सिद्धान्तों के खमीर से है। नए युग के ईसाई इस से अनुमान करते हैं कि 5000 भूखों में जो 5 रोटियां बांटी गई थी, वह भी आटे की नहीं, ज्ञान की रोटियां थीं। भोजन शरीरिक के स्थान में आत्मिक था। इंजील-लेखक ने अपनी सरल बुद्धि से आत्मिक को शरीरिक समझा और वर्णन कर दिया।

ईसा के अन्य चमत्कार उसका अन्धों, लूलों, कोढ़ियों इत्यादि को अच्छा करना है। इन पर इनसाइक्लोपीडिया बिल्लिका अर्थात् बाईबल के विश्व-कोष में निम्नलिखित सम्मति प्रकाशित की गई

है-

''वस्तुत: हमें यह निश्चय करना चाहिए कि कितने और किस प्रकार के रोगों का निवारण ईसा ने किया। हमें यह पूर्ण अधिकार है कि केवल उन्हीं रोग-निवृत्तियों को ऐतिहासिक समझें जो आजकल के वैद्य भी मानसिक व्याधियों से कर सकते हैं, जैसे विशेषतया मानसिक रोग। यह समझना कदापि कठिन नहीं कि ईसा के समकालीनों ने सम्भवत: उसके कई ऐसे कार्यों को देखा हो जिन्हें उन्होंने अलौकिक समझा हो और इससे प्रभु में सब अलौकिक शक्तियों की कल्पना कर ली हो। जैसे आजकल के लोगों को विवेक नहीं होता, उन्हें भी न हुआ हो कि कौन से रोग मानसिक विधियों से ठीक हो सकते हैं और कौन से नहीं, यह भी स्मरण रखना चाहिए कि रोग का निवारण संभवत: अस्थायी हुआ होगा। यदि रोग की फिर आवृति हुई होगी, तो चिकित्सा की शक्ति का दोष न समझा गया होगा।''

लेखक का विचार है कि यह रोग ही सम्भव है आत्मिक हों। (Enc. Bile col 1885) अन्धे का अभिप्राय हैं अन्धबुद्धि। लूले का अर्थ धर्मपंगु इत्यादि। इनकी चित्किसा उपदेश द्वारा हुई होगी (Enc. Bile col. 1883)।

बाइबल के अक्सर वृत्तांतों को यह महाशय कथानक मात्र मानते हैं। इंजीर के वृक्ष का सूखना क्या था? जाति का हत-भाग्य होना था इत्यादि।

इस अनुमान के लिए इस लेखक के पास युक्ति भी है इंजीर का पकना ईस्टर के दिनों में रख दिया है, जो कभी हो नहीं सकता। (मार्क-11-12-14, 20-25)

ल्यूक 33-44 मार्क 15-33 मैथ्यू 27-45 में सूर्य ग्रहण का वर्णन है, जिसकी तिथि 14 या 15 बताई गई है और सूर्य ग्रहण प्रतिप्रदा को ही होता है।

प्रभु ईसा के जन्म और मृत्यु को भी चमत्कार का रूप दिया जाता है परन्तु अब बड़े-बड़े ईसाई मानने लगे हैं कि ईसा की माता मेरी और पिता जौजिफ थे। इसी इन्साइक्लोपीडिया के स्तंभ 33-44 पर यह विचार प्रकट किया है। मृत्यु की घटना पर विवाद है। कोई-कोई इसे आत्मिक दर्शन मानते हैं। परन्तु अभी एक पत्र हमारे हाथ आया है जो महात्मा ईसा की मृत्यु के सात वर्ष पीछे लिखा गया था। आशा है वह पत्र शीघ्र प्रकाशित होगा। उसमें बताया गया है कि ईसा सूली पर मरे ही न थे। जीते उतार लिए गए थे। उन्होंने छिप-छिप कर अपने शिष्यों को दर्शन दिए। इस विषय के उद्धरण हम फिर कभी पाठकों के सम्मुख रखेंगे।

यह हुई प्रभु ईसा के चमत्कारों की व्यवस्था अब मुहम्मद महोदय की ओर आइए। चमत्कार दिखाने में उनको केवल संकोच ही नहीं किन्तु स्पष्ट नकार है। तो भी उन पर चमत्कार गढ़ दिए गए हैं। चांद को दो टुकड़े करना इन का प्रसिद्धतम चमत्कार है। इसका वर्णन कुरान में यों आया है-

''समय आ गया और चांद टुकड़े-टुकड़े हो गया।'' (27-1)

''और यदि वे चमत्कार देखें तो वह मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं, क्षणिक जादू।'' (27-2)

चांद के टुकड़े होने का प्रमाण कुरान को छोड़ कर कहीं और नहीं मिलता। अरब का अपना अलग चांद तो कोई है नहीं कि वह टुकड़े हुआ हो और संसार ने उसे न देखा हो। मिर्जा कादियानी ने महाभारत के किसी आनन्द पर्व का हवाला दिया है कि वहां इस चमत्कार का वर्णन है, परन्तु महाभारत में आनन्द पर्व नाम का कोई पर्व ही नहीं।

तो कुरआन में इसका वर्णन कैसे हुआ? मौलाना मुहम्मद अली एम. ए. ने कुरान की एक नई टीका छपवाई है। वह लिखते हैं यह घटना ऐतिहासिक है क्योंकि सब मुसलमानों ने इसे माना है। पर विज्ञान का मुंह बन्द कैसे हो? मौलाना लिखते हैं-

''सम्भव है, यह विशेष प्रकार का चन्द्र ग्रहण हो, जिसमें चांद दो टुकड़े हुआ प्रतीत होता हो, उस का आधा भाग काला हो और आधा चमकीला ''या चन्द्रलोक में कोई बड़ा उपद्रव हुआ हो या कोई ऐसी असाधारण प्राकृतिक घटना हुई हो। यह भी स्मरण रखना चाहिए कि इस चमत्कार की विशेषता चमत्कार होने में नहीं किन्तु उसके उस समय घटित होने में है, जिसकी भविष्यवाणी संदेश हर न की थी। The Holy Quran पृष्ठ-1022 पाद टिप्पणी-2388।

चन्द्र टूटने का अर्थ यह भी दिया है कि बात प्रकट हो गई (दी अफेयर विकेम मैनीफेस्ट) यह अर्थ ले लिए जाएं, तो घटना हुई ही नहीं।

इन मौलाना से कम बुद्धिमान् टीकाकार इस घटना को भविष्यवाणी के रूप में प्रगट करते हैं कि कयामत के दिन चान्द टूटेगा, अभी टूटा नहीं।

श्री मुहम्मद महोदय के और चमत्कार भी बताए जाते हैं परन्तु कुरान में इसी एक का स्पष्ट वर्णन है। शेष कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं। हदीसों में इनके लघुशंका से रोग ठीक करने के किस्से हैं, परन्तु उन्हें श्रद्धालु भक्तों की भक्ति पूर्ण गप्प समझना चाहिए। यही अवस्था प्रभु ईसा के थूक से अन्धों को ठीक करने आदि सिद्धियों की है।

कुरान में श्रीमान् मुहम्मद महोदय के तो नहीं, परन्तु सुधारकों के चमत्कारों का वर्णन है। ईसा को कुमारी का पुत्र कहा गया है। उनके पानी पर चलने, मिट्टी से पक्षी बनाने, हवा में उड़ने आदि का भी वर्णन है। पहले टीकाकार आंखें मीचे हुए यह सब वृत्तान्त ऐतिहासिक मानते चले आए हैं परन्तु मौलाना मुहम्मद अली इसका अर्थ वह नहीं करते, जो ईसाई पादरी। मिट्टी मनुष्य का मूल है। उसका पक्षी बनना और हवा में उड़ना ज्ञान के आकाश की सैर है। इत्यादि। (Holy कुरान पृष्ठ 156)

परमात्मा को मेरी ने कहा, मुझे पुरुष ने नहीं छुआ तो परमात्मा ने कहा, अल्लाह बनाता है, जो चाहता है। (कुरान 3-46)

इससे स्पष्ट है कि कुरान के लेखानुसार ईसा का जन्म कुमारी से हुआ। पर जब ईसाई ही इस असम्भव की संभावना स्वीकार नहीं करते तो मुसलमानों को क्या पड़ती है कि उनकी मुफत की वकालत करें। मौलाना लिखते हैं, परमात्मा के साथ बात करते समय मेरी कुमारी थी। उसके पीछे भी ऐसी रही हो, इसका क्या प्रमाण है? (Holy कुरान पृष्ठ 156 पाद टिप्पणी 427)

मौलाना की इन युक्तियों को समझ सकना पाठकों की बुद्धि पर निर्भर है। ईसाई पादरी इंजीलों को अक्षरश: सत्य नहीं मानते।

प्रभु ईसा की भाषण-प्रणाली अलंकार युक्त होती थी। इन अलंकारों का गुह्य अर्थ न समझ कर इंजील-कारों ने उनमें प्रक्षेप किया है। प्रभु के वचन और कथक्कड़ों के वचन जुड़ नहीं सके। खोटा खरा अलग किया जा सकता है। हां! परखिए की आवश्यकता है। यह मत इस नए युग के ईसाई पादरियों का है।

श्रीयुत मुहम्मद के समय में इंजीलें प्रचलित थी। उनकी कथाएं ऐतिहासिक मानी जाती थीं। मुहम्मद महोदय ने उन्हें ज्यों का त्यों स्वीकार किया और कुरान में डाल दिया यह कथाएं इस्लाम की पूंजी नहीं हैं और इनसे पल्ला छुड़ा कर भी मुसलमान रह सकता है। कठिनाई यह है कि इनका समावेश कुरान में हो गया है और कुरान मुसलमानों की दृष्टि में नित्य ज्ञान है, इसका अक्षर-अक्षर सत्य है। मौलाना मुहम्मद अली वह स्वतन्त्रता नहीं बर्त सकते जो मैडर्निस्ट ईसाई वर्त सकते हैं। अलंकार कुरान की भाषा में दिखाते हैं। परन्तु ऐसा करने से साहित्य का खून हो जाता है। यदि मौडर्निस्टों की तरह यह भी कुरान लेखक की भूल स्वीकार कर सकते तो चमत्कार से शीघ्र छुट्टी होती। हां बड़ी सफाई से होती सरलता से होती।

कुछ हो, संसार का विश्वास चमत्कारों से हट गया है श्री मुहम्मद महोदय पर मौलाना मुहम्मद अली के लेखानुसार भी एक चमत्कार का भार अवश्य है, वह है भविष्य वाणी करने का, चन्द्र के टुकड़े करने में इस्लाम के प्रवर्तक का हाथ नहीं, उसके विषय में भविष्य वाणी कर और उस भविष्यवाणी के पूरा उतरने में उसका महत्व अवश्य है।

भविष्य-वाणी का सिद्धान्त एक पृथक् सिद्धान्त है और उसकी विवेचना करने के लिए एक अलग लेख-लिखने की आवश्यकता है। यह सिद्धांत भी चमत्कार के विश्वास अवशिष्ट मात्र है मिर्जा गुलाम अहमद कादियानी का धार्मिक नेतृत्व उतना उनके प्रकाशित किए धार्मिक मन्तव्यों पर अवलंम्बित नहीं, जितना उनकी भविष्य-वाणियों पर, उन्होंने हकीकत उल-वही नामक पुस्तक की भूमिका में लिखा है कि जीते परमात्मा की साक्षी बिना इसके क्या हो सकती है कि मनुष्य का आन्तरिक सम्बन्ध उस सर्वज्ञ प्रभु से हो, जो उसे आने वाली घटनाओं का ठीक-ठीक पता दिया करे। मिर्जा गुलाम अहमद का इलहास परमात्मा की यही भविष्यवक्तृताएं थीं। इन वक्तृताओं के विषय कुरान के कुछ अध्यायों और आयतों की तरह मीर्जा महाशय की घरेलू घटनाएं हैं। उनकी पूर्ति विचित्र ढंग से होती रही है। ''पुत्री न पुत्र:'' वाली ज्योतिषियों की घटनाओं पर घटती है।

समय आएगा जब मौलाना मुहम्मद अली या उनका कोई और धर्म भाई भविष्य-वाणी के सिद्धान्त से उतना ही दूर हो जायेगा जितना वह इस समय अन्य अलौकिक चमत्कारों के मानने से पृथक् हुए हैं।

यह एक भारी परिवर्तन है, जो संसार के धार्मिक विचारों में आया है। इसमें सन्देश नहीं कि विज्ञान के नित नए आविष्कारों ने जिन से आकाश में उड़ना, समुद्र पर तैरना भूमिगर्भ में घुसना, दीवार पीछे की चीज़ देखना, हजार मील की बात केवल संकेतों से ही नहीं, किन्तु उन्हीं शब्दों उन्हीं ध्वनियों में सुनना इत्यादि-इत्यादि चमत्कार जो पहले परमात्मा के विशेष कृपा-पात्रों द्वारा ही सम्पादित हो सकते समझे जाते थे, आज धनवानों के धन से सहसा कार्य किए जा सकते हैं। प्रशन उठता है-धन बड़ा कि धर्म? अब यदि इस बड़प्पन की कसौटी उपरिकथित चमत्कार हों, तो धन द्वारा तो वह प्रत्यक्ष प्राप्त होते ही हैं, परन्तु धर्म द्वारा उनके सिद्ध होने में सन्देह है। इसलिए धर्म को अपने बड़प्पन के लिए कोई नया आधार ढूंढने की आवश्यकता हुई है।

वह नया या अत्यन्त पुराना आधार चमत्कार नहीं, आचार है। ऋषि दयानन्द का जीवन चमत्कारक जीवन है, ऋषि के विचार की दृष्टि से परमात्मा ने सृष्टि के आदि में अपना सन्देश सुनाना था, सो सुना दिया। चमत्कार हो लिया। अमैथुनी सृष्टि की आज आवश्यकता नहीं, नए सन्देश की भी आज आवश्यकता नहीं। सन्देश हरों के व्याह रचाने की एजेंसी परमात्मा के पास नहीं। आज तो परमात्मा के संसर्ग का फल आत्मिक आनन्द है, उसके ध्यान से आन्तरिक शक्ति मिलती है। संसार के व्यवहारों में धीरता पूर्वक विचरने की शक्ति आती है। यह है जीते परमात्मा का अनुभव।

ऋषि दयानन्द से कहा गया कि यदि आप वेद का प्रमाण देना छोड़ दें और उसके स्थान में यह कह दिया करें कि परमात्मा ने मुझे ऐसा कहा है तो लोगों को श्रद्धा अधिक होगी।

ऋषि का उत्तर सोने के अक्षरों में लिखे जाने योग्य है। हंसे और कहां...''सत्य का प्रचार झूठ से करूं?''

आज महात्मा गान्धी उपवास का सन्देश परमात्मा से पाते हैं, ऋषि ने सब सन्देश वेद से पाए। यही ऋषि का चमत्कार है। जिन ज्ञान चक्षु विहीनों को ईसा आंखें दे चुके थे, उन्हें ऋषि के उपदेश से फिर आंखें लेनी पड़ी। चांद तोड़ना अरबी नबी का चमत्कार था, ऋषि ने वह चमत्कार ही तोड़ दिया। आज मजहबों में घुड़दौड़ है। सब आचार को परम चमत्कार मान रहे हैं। इसमें दयानन्द का चमत्कारमय जीवन आदर्श है। उस आदर्श की ओर सारे सुधारकों का जीवन सरकाया जा रहा है।

यह है ऋषि दयानन्द का चमत्कार जीवन आदर्श है। उस आदर्श की ओर सारे सुधारकों का जीवन सरकाया जा रहा है।

यह है ऋषि दयानन्द का चमकीला चमत्कार जिस पर समस्त धार्मिक संसार मुग्ध है। इस चमत्कार के आगे सब चमत्कार चूर हैं। इस चमत्कार के साथ दयानन्द मनुष्य है और मनुष्यों में देवता है। परमात्मा का पुत्र भी है और पुरुष-पुत्र भी। दयानन्द के कोष में (सन आफ मैन) और (सन आफ गाड) पर्याय हैं। परमात्मा का सन्देश संसार को पहुंचा दिया है पर उसके लिए सात आसमानों पर नहीं उड़ा। परमात्मा में और इसमें दो कदमों का भी अन्तर क्यों हो, तिलभर का भी अन्दर नहीं। स्वयं दयानन्द परमात्मा का चमत्कार है, जैसे जोनास निनेबा वालों के लिए चमत्कार था और ईसा जरुसलाम वालों के लिए।

इस चमत्कारी दयानन्द को नमस्कार उसके चमत्कारों को नमस्कार!! इस चमत्कार-शैली को नमस्कार!!!

कैसे प्यारे शब्द हैं 'सत्य का प्रचार झूठ से करूं?

मतों वालों! पढ़ो और इस चमत्कार की चमक में अपने मतों को चमका दो।

(पृष्ठ 14 का शेष)

बोधोत्सव आया है, जागोगे?

सम्पूर्ण समाज के लिए समस्या बन चुके हैं। आर्यसमाज को अपने संगठन को सुदृढ़ करना चाहिए और गतिशील कार्यक्रम बनाकर देश को, समाज को नेतृत्व देना चाहिए।

सम्पूर्ण समाज में अशान्ति का साम्राज्य स्थापित होता चला जा रहा है। शान्ति अपना सर पटक पटक कर पूछ रही है 'शान्तिकरण' का पाठ करने वालो! तुम्हारे ही मन्दिरों में मेरे लिए कहीं ठौर है? व्यक्ति, परिवार, समाज, राष्ट्र और सम्पूर्ण जगत कहीं भी उसके लिए अब आशा की किरण दिखाई नहीं देती। आज भाई-भाई का गला दबा रहा है। पुत्र पिता की ही हत्या कर रहा है, पत्नी पति को तलाक देने के लिए न्यायालय के द्वार पर खड़ी है। वर्णाश्रम व्यवस्था की तो धज्जियां ही उड़ गई हैं। उसका स्थान तो अब जातिवाद की व्याधि ने ले लिया है। वर्ण का आधार कर्म न होकर जन्म और जाति को मान लिया गया है। आर्यसमाज पूरे सौ वर्ष तक इसे दुनियां को समझाता रहा, फिर भी वह कांशीराम बन गई और मुलायम सिंह के स्वप्नों का महल उसी पर खड़ा हो गया। देश दलित, हरिजन, अगड़े-पिछड़े, ऊंचे-नीचे अवर्ण और सवर्ण में बैठ गया। एक बीमारी बहुसंख्यक-अल्पसंख्यक की और गले में उतार दी स्वार्थ के अन्धे राजनीतिज्ञों ने। अब किस-किस को रोओगे? इसका लाभ किसे हो रहा है। उस धर्मान्ध सम्प्रदाय के रूप में ऐसी संगठित है कि हर राजनैतिक दल उनके लिए पहले सोचता है देश की संस्कृति सभ्यता के लिए चिन्तन का तो अवकाश ही कहां है?

दानवता की विजय, पराजय, मानवता की घोर अन्याय है।
बात पराये की मत पूछो, हमें तो अपनो से भय है।।

सम्पूर्ण समाज विश्रृंखल होता जा रहा है। जाति उपजाति, मत, पन्थ, सम्प्रदाय, वर्गवाद की ऐसी आन्धी चल रही है जिसने सामाजिक ढांचे को जीर्ण-शीर्ण और दिशाहीन कर दिया है। कटुता, कलह और अन्तर्दाह की अग्नि में मानो यह भस्मासुर सबको अपना ग्रास बना लेगा और आर्यसमाज गतिहीन सब कुछ देख रहा है। यह है हमारी अन्तर्वेदना। आप इसे समझने का समय निकालेंगे? कोई कार्यक्रम निश्चित करेंगे कि इसका सामना कैसे किया जाए?

हमारी बची-खुची संस्कृति को निगल रहा है आज का दूरदर्शन का कार्यक्रम जिसके नित नए चैनल न केवल हमारी मानसिक विकृतियों को बढ़ावा दे रहे हैं अपितु इनसे आर्थिक शोषण की प्रक्रिया भी दिन प्रतिदिन तीव्र हो रही है। पूर्णतया पश्चिमी करण हो गया है। नग्न यौनाचार के दृश्य दिखाए जा रहे हैं संगीत भी चौड़ा और निम्न स्तर का है। चित्रहार, चरित्र का ही आहार बन गया है और हम एक शब्द भी विरोध में कहने का साहस नहीं जुटा पा रहे।

बोधोत्सव की वेला इन सब प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार करने की वेला है। अभी गहरी निद्रा में सोए रहना है या जागना है।

उठो मेरे मित्रो उठो! मेरे बुजुर्गो उठो, नवयुवको उठो, मेरी बहिनों उठो, माताओं अपने पुत्रों को करवट लेने को कहो।

एक बार करवट तो बदलो।
सारा जग जयकार करेगा।।

(पृष्ठ 17 का शेष)

महर्षि दयानन्द सरस्वती

और संस्कार विधि अधिक प्रसिद्ध हैं। इनके ग्रन्थों का लोहा अब भी सारा विश्व मान रहा है। सत्य के प्रसार के लिए इन्हें बहुत कष्ट उठाने पड़े। इनके ऊपर पत्थर तक बरसाए गए, किन्तु आप 'आशा गुरुणाम-विचारणीया' के सूत्र को लेकर अपने कार्य में लगे रहे।

स्वामी दयानन्द जी ने सब कुछ वेदानुकूल ही किया। सत्यवादी से झूठा ईर्ष्या करता है, इसीलिए मुसलमान, अंग्रेज और धूर्त उनके विरोधी बन गए। वे एक बार जोधपुर में प्रचार करने गए। नरेन्द्र यशवन्त सिंह जी ने अपने राज्य में ऋषि का बहुत सत्कार किया। एक दिन की बात है कि ऋषि दयानन्द जी राजमहल में प्रविष्ट हुए तो देखते क्या हैं कि नन्ही जान वेश्या राजमहल में है। राजा से बोले 'राजन्! राजा तो सिंह के समान होते हैं। उनका अनेक कुलों का चक्कर लगाने वाली कुतिया से क्या कार्य? इनके चक्कर में पड़ कर अध:पतन का द्वार खुल जाता है।'

नन्ही जान इन शब्दों को सुनकर तड़प उठी। उसने ऋषि के पाचक जगन्नाथ के हाथों से ऋषि जी को दूध में संखिया मिला कर पिलवा दिया। यह बात ऋषि को ज्ञात हो गई। उन्होंने जगन्नाथ को कुछ धन देकर नेपाल भाग जाने को कहा, जिससे उसकी प्राणरक्षा हो जाए। धन्य हैं दयानन्द! आप विषदाता को भी प्यार करके चले गए।

ऋषि के शरीर पर फोड़े-फुंसी निकल आये। एक महीने तक मृत्यु का सामना करते रहे। इससे पूर्व भी 16 बार उन्हें विष पिलाया गया था, जो उन्होंने न्यौली क्रिया द्वारा निकाल दिया था किन्तु इस बार विष सारे शरीर में व्याप्त हो चुका था। उन्होंने नाई को बुलाकर क्षौर करवाया। गीले कपड़े से शरीर पोंछा। अपने कमरे की सब खिड़कियां खुलवा दीं। सबको बाहर जाने का आदेश दिया। महीना, पक्ष, तिथि और बार पूचे। पाण्ड्या मोहन लाल जी ने नम्र शब्दों में कहा-'भगवान्! सम्वत् 1940 विक्रमी का कार्तिक, कृष्णपक्ष, अमावस्या और मंगलवार है।' ऋषि ने दृष्टि चारों तरफ घुमाई और वेदों के मन्त्र उचारण किये, गायत्री का जाप किया, आंखें खोलीं और बोले-'हे ईश्वर! तेरी यही इच्छा थी। तेरी इच्छा पूर्ण हो। तूने अच्छी लीला की। नदनन्तर ओ३म् नाद के साथ प्राणों को बाहर निकाल दिया और प्रकाश पुंज सदा-सर्वदा के लिए हमें एक महान् दीप देकर हमारे बीच से चले गए। दीपावली के दिन हजारों दीपक जलाये गये, परन्तु उस महान् दीपक के बिना-महान् अग्नि के बिना सब तरफ अन्धेरा ही अन्धेरा दिखाई देता था।

अन्तिम दृश्य को पं० गुरुदत्त विद्यार्थी देख रहे थे। वह उस ऋषि के देदीप्यमान मुखमण्डल को देखकर नास्तिक से आस्तिक बन गए। धन्य है महापुरुषों का जीवन। अपने अन्तिम समय भी असत्य से युद्ध किया और उस पर विजय प्राप्त की।

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

सारे संसार का कल्याण करने वाले उस परमपिता परमात्मा को बार-बार नमस्कार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

दोआबा आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, नवांशहर

(स्थापित–1911)

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) गुरुदत्त भवन,
किशनपुरा चौक, जालन्धर द्वारा संचालित
अपने गौरवमय इतिहास को पुनर्जीवित
करने के लिये दृढ़ संकल्पिक
निरन्तर प्रगति की
ओर अग्रसर

विशेष आकर्षण

सुन्दर, विशाल भवन, भव्य पुस्तकालय, अत्याधुनिक कम्प्यूटर शिक्षा, शानदार परीक्षा परिणाम, अनुभवी तथा योग्य अध्यापक, नैतिक, सांस्कृतिक व धार्मिक शिक्षा, विशाल क्रीड़ा क्षेत्र, खेलों की आधुनिक प्रयोगशालाएं, समस्त भव्य सुविधाओं से परिपूर्ण

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये तुरन्त सम्पर्क करें।

जिया लाल शर्मा	ललित मोहन पाठक	कुलवन्त राय	राजेन्द्र सिंह गिल
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

ओ३म् इन्द्रायेन्द्रो परिस्रव।

ऋग्वेद 7,113,7

मेरा मन ज्योतिर्मान प्रभु की ओर प्रवाहित हो तथा परमानन्द की प्राप्ति करें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

बी.एल.एम.गर्ल्ज कालेज नवांशहर दोआबा

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. उच्च स्तर की पढ़ाई।

2. मेहनती व अनुभवी स्टाफ।

3. शिक्षा के क्षेत्र में उच्च स्थान।

4. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।

5. शिक्षा में देशभक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

❖❖❖

नये सत्र में अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

डा.सी.एम.भण्डारी	सुरेन्द्र मोहन तेजपाल	विनोद भारद्वाज	तरणप्रीत कौर
प्रधान	उप प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म्॥

मेधां मे वरुणो ददातु मेधामग्निः प्रजापति।
मेधामिन्द्रश्च वायुश्च मेधां धाता ददातु मे स्वाहा॥ (यजुर्वेद 32/5)

हे सर्वोत्कृष्टेश्वर! आप आनन्दस्वरूप और आनन्ददाता हैं, विज्ञानमय और विज्ञानप्रद हैं, सब संसार के अधिष्ठाता और पालन ऐश्वर्य दाता हैं, परमपवित्र और अनन्त बलवान हैं, सब के धारण पोषण करने वाले हैं, कृपा करके हम को ऐसी बुद्धि दें कि जिससे हम सर्वविद्या सम्पन्न हों, यह हमारी बारम्बार प्रार्थना है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर.के. आर्य कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख–रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

शिवरात्रि के शुभ अवसर पर, प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्य, प्राध्यापकगण, प्रिंसीपल और विद्यार्थी सभी आर्य बन्धुओं व बहिनों को हार्दिक बधाई भेंट करते हैं।

☆☆☆☆

नवांशहर के क्षेत्र में उच्च शिक्षा का सबसे बड़ा केन्द्र। खेलों का समुचित प्रबन्ध व खुले मैदान, धार्मिक, नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान, चरित्र निर्माण पर विशेष बल।

☆☆☆☆

नये सत्र में अपने बच्चों के सर्वतोमुखी विकास के लिये, उनके चरित्र निर्माण के लिये, धार्मिक व नैतिक शिक्षा के लिये और उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें ***आर.के. आर्य कालेज नवांशहर*** में प्रवेश करवायें।

देशबन्धु भल्ला एडवोकेट	सोहन सिंह	जे.के.दत्ता	डा.संजीव डाबर
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नमः शम्भवाय च मयो भवाय च नमः शंकराय च।
मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतराय च॥

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोधदिवस के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.ए.एन.आर्ट एंड क्राफ्ट (A.C.T) कालेज नवांशहर

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में
निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. नवांशहर क्षेत्र में आर्ट्स एंड क्राफ्ट का एक मात्र कालेज
2. अनुभवी तथा ट्रेंड स्टाफ।
3. सुसज्जित मैदान।
4. शानदार पेटिंग सिखाने का प्रबन्ध।
5. सभी प्रकार की आधुनिक विद्याओं से युक्त।
6. बोर्डिंग का उचित प्रबन्ध
7. शत्-प्रतिशत् परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास की ओर विशेष ध्यान
प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

विनोद कुमार	बख्तावर सिंह	विपिन तनेजा	आशा शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

नाप्राप्यमभिवांछन्ति नष्टं नेच्छन्ति शोचितुम्।
आपत्सु च न मुहयन्ति नराः पण्डित बुद्धय्॥

जो मनुष्य प्राप्त होने के अयोग्य पदार्थों की कभी इच्छा नहीं करते अदृश्य व किसी पदार्थ के नष्ट भ्रष्ट हो जाने पर शोक करने की अभिलाषा नहीं करते और बड़े–बड़े दुःखों से मुक्त व्यवहारों की प्राप्ति में भी मूढ़ होकर नहीं घबराते, वे मनुष्य पंडितों की बुद्धि से युक्त कहाते हैं। (व्यवहारभानु)

– महर्षि दयानन्द

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डब्ल्यू.एल. आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल नवांशहर

☆☆☆

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संरक्षण में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

☆☆☆

1. अनुभवी तथा उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
2. नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष बल।
3. अच्छे परीक्षा परिणाम, सुन्दर भवन, हवादार कमरे।
4. आधुनिक विशेषताओं से युक्त पाठ्यक्रम में देश भक्ति व सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य और आदर्श शिक्षा के लिये सम्पर्क करें।

ललित मोहन पाठक	ललित शर्मा	जिया लाल शर्मा	आरती कालिया
प्रधान	उपप्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ओ३म् ॥

न वा उदेवाः क्षुधमिद् वधं ददुः, उताशितमुपगच्छन्ति मृत्यवः।
उतो रयिः पृणतो नोपदस्यति, उतापृणन् मर्डितारं न विदन्ते॥ (ऋ. 10/117/1/11)

देवों ने न केवल भूख दी भूख के रूप में मौत दी है, अपितु खाते पीते अमीर को भी नाना प्रकार से मौत आती है और देने वाले की धन-सम्पत्ति क्षीण कभी नहीं होती अपितु जो दान न देने वाला है, वह कभी भी किसी सुख को प्राप्त नहीं करता अपितु दान देने वाला सुख को प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डा. आसानन्द आर्य माडल सी.सै.स्कूल नवांशहर

विशेषताएं

☆☆☆

1. शिशुशाला से +2 तक नियमित कक्षाएं और सुयोग्य एवं प्रशिक्षित स्टाफ।
2. धार्मिक शिक्षा।
3. कम्प्यूटर शिक्षा।
4. हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम से पाठ्यक्रम का पठन-पाठन।
5. विशाल क्रीडा क्षेत्र।
6. सुन्दर भवन।
7. हरे-भरे वृक्ष।
8. उचित जल एवं विद्युत व्यवस्था।
9. हवादार कमरे आदि विशेषताओं से सम्पन्न है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की छत्रछाया में उन्नति के पथ पर अग्रसर

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

वीरेन्द्र सरीन	ललित कुमार शर्मा	अंचला भल्ला	अमित सभ्रवाल
प्रधान	प्रबन्धक	डायरैक्टर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तंमीडत प्रथमं यज्ञसाधं विश आरीराहुतमृंजसानम्
ऊर्जः पुत्रं भरतं सुप्रदातुं देवा अग्निं धारयन् द्रविणोदाम ॥ (ऋ. 1/7/3/3)

जो परमात्मा सब जगत् का आदिकारण, वेदविहित कर्मों से प्राप्त होने योग्य, सबका अधिष्ठाता तथा पूजनीय है और जिसको विद्वान लोग प्रकाश तथा नम्रता का देने वाला, जगत् का दुःख हर्ता, धारण पोषणकर्त्ता, ज्ञान तथा क्रिया शक्ति आदि उत्तम पदार्थों का देने वाला मानते हैं, उसी की सब को स्तुति करनी चाहिये, अन्य की नहीं। (आर्याभिविनय)

- महर्षि दयानन्द

◆◆◆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

◆◆◆

हार्दिक शुभकामनाएं

◆◆◆

डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन, नवांशहर

❐ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❐

विशिष्टताएं

सुयोग्य प्राचार्य व प्राध्यापकगण, बृहद पुस्तकालय, सांस्कृतिक गतिविधियां, नैतिक व धार्मिक शिक्षा पर बल, कम्प्यूटर और होस्टल सुविधाएं उपलब्ध व समस्त आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण। नये सत्र के लिये अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

◆◆◆

विनोद कुमार भारद्वाज	डा. मीनाक्षी शर्मा	श्रीमती गुरविन्द्र कौर
प्रधान	सचिव	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

राष्ट्र च रोह द्रविणं व चरोह (अथर्व. 13/1/34)

सुख के लिये राज्य और धन को बढाओ।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के शुभ अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य कालेज लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. शहर के मध्य में स्थित।
2. अनुभवी व उच्च शिक्षा प्राप्त स्टाफ।
3. हवादार कमरे, खेलने के लिये खुला मैदान।
4. लड़के, लड़कियों के लिये पढ़ाई की अलग अलग व्यवस्था।
5. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
7. सभी तरह की विशेषताओं से युक्त पुस्तकालय व प्रयोगशाला।

नये सत्र में अपने बच्चों का उज्जवल भविष्य बनाने के लिये इस कालेज में प्रवेश करवायें।

सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा	सतीशा शर्मा	सविता उप्पल
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

यज्जाग्रतो दूरमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवैति।
दूरंगमं ज्योतिषां ज्योतिरेकं, तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु ॥20॥

भावार्थ- हे प्रभो! तेरा दिव्य शक्ति वाला जो मन जागते हुये का व सोते हुये का दूर दूर तक जाता है अर्थात् चिन्तन करता है, जो सभी ज्ञान-साधक इन्द्रियों का प्रधान ज्योति प्रकाशक है, वह मेरा मन आपकी कृपा से शुभ विचारों वाला होवे।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभ अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य सीनियर सैकेण्डरी स्कूल लुधियाना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. समृद्ध स्वामी दयानन्द पुस्तकालय।
2. अनुभवी, लग्नशील, मेहनती, सुयोग्य, ट्रेंड स्टाफ
3. स्कूल में पानी की उत्तम व्यवस्था के लिये प्रबन्ध।
4. अच्छे परीक्षा परिणाम तथा गत वर्ष की अपेक्षा विद्यालय में छात्रों की संख्या में वृद्धि।
5. प्रति वर्ष विद्यार्थियों की भलाई व कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का निर्णय।
6. आर्थिक अनियमितताओं को दूर करने के लिये प्रयासरत
7. प्राइमरी विंग के बच्चों के लिये खेलने की विशेष सुविधा।
8. खेलों के क्षेत्र में प्रथम आने वाले विद्यार्थियों के प्रोत्साहन के विशेष प्रबन्ध।
9. विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण तथा आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार व प्रसार के लिये स्कूल में धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

अरुण थापर	**श्रीमती राजेश शर्मा**	**रेखा कौल**
प्रधान	**मैनेजर**	**कार्यकारी प्रिंसीपल**

॥ ओ३म् ॥

वेद शास्त्रों को पढ़ने वाला व्यक्ति निर्धन भी अच्छा है परन्तु शास्त्र के अध्ययन से रहित और आचरणहीन मनुष्य धनवान भी अच्छा नहीं। सुन्दर नेत्रों वाला फटे पुराने कपड़ों में भी सुन्दर लगता है परन्तु नेत्रहीन सोने के गहनों से सजा हुआ भी शोभित नहीं होता है।

★★★

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध दिवस के अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

★★★

आर्य गर्ल्ज सीनियर सै.स्कूल

पुराना बाजार, नजदीक दरेसी मैदान, लुधियाना

विद्यालय के विशेष आकर्षण

1. अंग्रेजी व हिन्दी मीडियम में शिक्षा।
2. उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
3. बढ़िया बोर्ड परीक्षा परिणाम।
4. खुले व हवादार कमरे।
5. सांस्कृतिक गतिविधियां।
6. समृद्ध पुस्तकालय
7. गरीब एवं योग्य छात्राओं को छात्रवृत्तियां व वर्दियों का प्रबन्ध।
8. कॉमर्स एवं कम्प्यूटर प्रशिक्षण का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल में स्वच्छ जल के लिये फिल्टर्ज की व्यवस्था।
10. जरूरतमंद छात्राओं के लिये वर्दियों और स्वैटरस वितरण।
11. प्रतिवर्ष बच्चों की भलाई और कल्याण के लिये एजुकेशनल टूर ले जाने का प्रबन्ध।

नये सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य व सर्वांगीण विकास के लिये सम्पर्क करें।

विजय सरीन	वजीर चंद	रणवीर शर्मा	ज्योति किरण शर्मा
प्रधान	उप प्रधान	प्रबन्धक	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

शं नो देवा विश्वदेवा भवन्तु, शं सरस्वती सह धीभिरस्तु।

शमभिशाचः शमु रातिषाचः शं नो दिव्याः पार्थिवा शं नो अप्याः॥

भावार्थ- हे प्रभो! आपकी कृपा से दिव्य गुण कर्म स्वभाव वाले साधारण जन, विविध प्रकार के देने वाले दाता जन एवं द्युलोक, पृथिवी लोक और अंतरिक्ष लोक से सम्बन्ध दैवी शक्तियां हमारे लिये कल्याणकारी हों।

★★★

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस व बोध दिवस के पावन अवसर पर

★★★

हार्दिक शुभकामनाएं

दयानन्द पब्लिक स्कूल

दीपक सिनेमा रोड, लुधियाना

(पंजाब शिक्षा बोर्ड से मान्यता प्राप्त)

प्री-नर्सरी से दसवीं कक्षा तक इंग्लिश/ हिन्दी मीडियम, पंजाब पढ़ाने का उत्तम प्रबन्ध

विशेषताएं

1. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
2. आर्ट्स,क्राफ्ट एवं कम्प्यूटर का समुचित प्रबन्ध।
3. चरित्र निर्माण व धार्मिक शिक्षा का प्रबन्ध।
4. शीतल पेय जल के लिये वाटर कूलर का प्रबन्ध।
5. विशाल एवं हवादार कमरे।
6. शहर के मध्य में स्थित।
7. बढ़िया फर्नीचर।
8. खुला मैदान।
9. शानदार परीक्षा परिणाम।

नये सत्र में प्रवेश के लिये सम्पर्क करें।

संत कुमार	मुनीष मदान	निर्मल कान्ता
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

विद्या:- जिससे ईश्वर से लेके पृथिवी पर्यन्त पदार्थों का सत्य-विज्ञान होकर उनसे यथायोग्य उपकार लेना होता है, इसका नाम 'विद्या' है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

मालवा का शान्ति निकेतन

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देखरेख में निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

+1 और +2 के साथ-साथ बी.ए. तृतीय वर्ष तक पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला से सम्बन्धित संस्था

1. Post Graduate Diploma in Computer Application.
2. Post Graduate Diploma in Dress Designing & Tailoring (both affiliated to Punjabi University Patiala)कोर्स भी चल रहे है। इस कालेज में पंजाबी, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, इक्नामिक्स, राजनीति शास्त्र, इतिहास, संगीत, फिलास्फी विषयों के साथ-साथ कम्प्यूटर, आफिस मैनेजमेंट, होम मैनेजमेंट, फाईन आर्ट्स के विषय भी पढ़ाये जा रहे हैं। पंजाबी यूनिवर्सिटी, पटियाला का केवल यह एक कालेज है जहां फैशन डिजाइनिंग का विषय भी पढ़ाया जाता है।

यू.जी.सी. स्कीम अधीन कई अन्य विषय/ कोर्स शुरू किये गए हैं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

डा.सूर्यकांत शोरी	भारत भूषण मैनन एडवोकेट	केवल जिन्दल	डा.नीलम शर्मा
प्रधान	महासचिव	उपप्रधान	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

तीर्थः- जितने विद्याभ्यास, ईश्वरोपासना,धर्मानुष्ठान , सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेन्द्रियादि उत्तम कर्म हैं, वे सब 'तीर्थ' कहाते हैं क्योंकि इन करके जीवन दुखसागर से तर जा सकते हैं। (महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल स्कूल, बरनाला

विश्व गुरु स्वामी दयानन्द जी सरस्वती के पद्चिन्हों पर चल कर अपना मानव जीवन सफल बनायें तथा राष्ट्र को सही दिशा दें।

■ विशेषताएं ■

1. योग्य, परिश्रमी और अनुभवी अध्यापक वर्ग।

2. प्रबन्धक समिति के शिक्षित और दूरदर्शी सदस्यों द्वारा पूर्ण सहयोग।

3. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान।

4. खेलों के साथ साथ सह पाठ्यक्रम क्रियाओं के प्रति विशेष ध्यान।

5. शिक्षण विकास की परीक्षा हेतु समयानुसार परीक्षाएं।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये उन्हें आर्य माडल स्कूल बरनाला में दाखिल करवायें। सम्पर्क करें

हरमेल सिंह जोशी
प्रधान

भारत भूषण मेनन
मैनेजर

राजेश कुमार गांधी
सैक्रेटरी

रजनी रानी
प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के पावन पर्व पर

☆☆☆

गांधी आर्य सी.सै.स्कूल बरनाला

☆☆☆

की ओर से सभी को हार्दिक शुभ कामनाएं।

स्कूल की मुख्य विशेषताएं :-

- सभी कक्षाओं के शत–प्रतिशत परिणाम।
- उच्च शिक्षित अध्यापक वर्ग।
- खुले तथा हवादार कमरे।
- वैदिक धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा पर विशेष बल।
- अन्य सह–क्रियाओं में छात्रों का रचनात्मक सहयोग।
- अनिवार्य कम्प्यूटर शिक्षा।
- खेलों का उचित प्रबन्ध।
- बिजली पानी का उचित प्रबन्ध। नये सत्र में बच्चों के दाखिला के लिये सम्पर्क करें।

भारत भूषण मैनन एडवोकेट	**सूर्यकान्त शोरी**	**संजीव शोरी**
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	मैनेजर
भारत मोदी	**रामकुमार सोवती**	**श्रीमती सुमन**
सचिव	एडवाइजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

मुक्ति के साधनः- अर्थात् ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना और उपासना का करना तथा धर्म का आचरण, पुण्य का करना, सत्संग, तीर्थ सेवन, विश्वास, सत्पुरुषों का संग, परोपकारादि सब अच्छे कामों का करना और सब दुष्ट कर्मो से अलग रहना है, ये सब 'मुक्ति के साधन' कहाते हैं। महर्षि दयानन्द

दयानन्द केन्द्रीय विद्या मंदिर, बरनाला

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर हार्दिक बधाई

❐ निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर ❐

- **आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मार्ग दर्शन में बरनाला जिले में अग्रणी शिक्षा संस्था।**
- **समय पालन, सामाजिक सहयोग, देश प्रेम, पारस्परिक सद्भाव तथा विश्वास, उत्तरदायित्व की भावना, अनुशासन तथा धर्म और संस्कृति के प्रति आदर का पाठ्यक्रम में समावेश।**
- **कम्प्यूटर शिक्षा, संगीत शिक्षा, क्रीड़ा प्रतियोगिताएं, शैक्षणिक भ्रमण, समृद्ध प्रयोगशाला, समृद्ध पुस्तकालय, खुले हवादार कमरे, वाटर कूलर, जैनरेटर तथा प्राथमिक सहायता की सुविधा।**

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें

☆☆☆

भारत भूषण मैनन
प्रधान

भारत मोदी
मैनेजर

संजीव शोरी
सैक्रेटरी

वन्दना गोयल
कार्यकारी प्रिंसीपल

अनीता मित्तल
डायरैक्टर

॥ ओ३म् ॥

तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं, जीवेम शरदः शतं, शृंणुयाम शरदः शतं, प्रब्रवाम शरदः शतं, अदीनाः स्याम शरदः शतं,भूयश्च शरदः शतात् ॥9॥

भावार्थः हे प्रभो आप सबके मार्ग दर्शक हैं, विद्वानों के परम हितकारक हैं, आप तेजोमयी शक्ति हैं- हम सौ वर्ष तक आपको ज्ञान चक्षुओं से देखते रहें, सौ वर्ष तक आपके उपदेश को सुनते रहें, और दूसरों को सुनाते रहें, सौ वर्ष तक तथा इससे भी अधिक समय तक आपकी कृपा से हम स्वस्थ जीवन बिताएं और जन्म जन्मांतर तक आपका यश देखते सुनते रहें।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के शुभावसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल बठिंडा

बालिकाओं का उज्जवल भविष्य बनाने वाली एक श्रेष्ठ संस्था

इसके मुख्य आकर्षण हैं:-

1. नगर के मध्य में स्थित
2. खुले हवादार कमरे।
3. कक्षा प्रथम (पहली) से +2 (आर्टस व कॉमर्स) तथा मैडीकल, नॉन मैडीकल तक शिक्षा में प्रति वर्ष शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
4. बच्चों को नैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक व राष्ट्रीय शिक्षा देकर दृढ़ चरित्र-निर्माण व देशभक्त बनाने का प्रयास।
5. जरूरतमंद बच्चों के लिये पुस्तक व कोष व अन्य तरीकों से आर्थिक सहायता।
6. अनुशासन पर विशेष ध्यान।
7. विभिन्न उपायों से बच्चों के सर्वांगीण विकास पर सतत जोर देना।
8. आधुनिक लैब, साईंस ग्रुप +1, +2 के लिये उपलब्ध।

इस प्रकार अनुभवी प्रबन्धक समिति, सुयोग्य प्रधानाचार्य व प्रशिक्षित स्टाफ के समुचित नेतृत्व व मार्ग दर्शन में दिन-प्रतिदिन उन्नति के सोपानों को पार करता हुआ यह विद्यालय आपके बच्चों का स्वर्णिम भविष्य निर्मित करने के लिये नगरवासियों की सेवा में प्रस्तुत।

''नये सत्र में अपनी कन्याओं को प्रवेश दिलाएं, उन्हें योग्य, चरित्रवान व देशभक्त बनाएं।''

अनिल कुमार	**निहाल चंद एडवोकेट**	**सुषमा कुमारी**
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

सत्पुरुषः सत्यप्रिय,धर्मात्मा, विद्वान, सब के हितकारी और महाशय होते हैं, वे 'सत्पुरुष' कहाते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व ऋषि बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य माडल सी.सै.स्कूल, बठिंडा

विशेषताएं:

Ph.No.0164-2238328

1.नगर के मध्य स्थित।

2.योग्य, सुशिक्षित तथा अनुभवी स्टाफ।

3.विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष ध्यान।

4.शानदार परीक्षा परिणाम

5.नगर में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

6.प्रदूषण व ध्वनि रहित जेनरेटर, आर.ओ.पानी, आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

☆☆☆

अश्विनी कुमार मोंगा
प्रधान

श्रीमती ऊषा गोयल
संरक्षक

गौरी शंकर
वरिष्ठ उप प्रधान

सुरेन्द्र गर्ग
सचिव

विपिन कुमार गर्ग
प्रधानाचार्य

॥ ओ३म् ॥

जीव का रहस्य:- जो चेतन, अल्पज्ञ, इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुख और ज्ञान-गुण वाला तथा नित्य है, वह 'जीव' कहाता है।

(महर्षि दयानन्द)

ऋषि जन्म दिवस व बोध दिवस के पर्व पर सभी आर्य बन्धुओं और बहनों को स्कूल की प्रबन्धक समिति, प्रधानाचार्या एवं समस्त अध्यापकगण की ओर से

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य संस्कृति की गरिमा को समर्पित संस्था

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल एवं वैदिक कन्या पाठशाला

औहरी चौक, बटाला

संस्था के विशेष आकर्षण

1. छात्राओं के सर्वांगीण विकास का जाना-माना शिक्षा संस्थान।
2. धार्मिक तथा नैतिक शिक्षा का प्रबन्ध।
3. योग्य उच्चतम शिक्षा प्राप्त निष्ठावान तथा अनुभवी अध्यापक।
4. कम्प्यूटर लैब का उचित प्रबन्ध।
5. पुस्तकालय की सुविधा।
6. साफ-सुथरे उच्चस्तरीय कमरे।
7. गर्ल्ज गाईड तथा बैंड व्यवस्था।
8. सांस्कृतिक आधार।
9. बिजली के पंखे तथा शीतल पेयजल का प्रबन्ध।
10. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
11. नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

निरन्तर प्रगति की ओर नारी उत्थान में संलग्न संस्था

प्रविन्द्र चौधरी	अशोक कुमार अग्रवाल	विजय अग्रवाल	नीरू शैली
प्रधान	उप प्रधान	मैनेजर	कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

पुरुषार्थः–अर्थात् सर्वथा आलस्य छोड़ के उत्तम व्यवहारों की सिद्धि के लिये मन, शरीर,वाणी और धन से जो जो अत्यन्त उद्योग करना है, उसनको 'पुरुषार्थ' कहते हैं। **(महर्षि दयानन्द)**

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व के पावन अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

❖❖❖

श्रीराम आर्य सी.सै.स्कूल पटियाला

(Affiliated to P.S.E.B)

❖❖❖

■ *प्रमुख विशेषताएं* ■

1. शत प्रतिशत बोर्ड परिणाम।

2. सुयोग्य और अनुभवी स्टाफ।

3. शिक्षा का आधुनिक ढंग।

4. हिन्दी, अंग्रेजी व पंजाबी माध्यम।

5. उच्च शिक्षा, कम शुल्क।

6. प्राकृतिक वातावरण।

7. खुले व हवादार कमरे।

8. बड़ा खेल का मैदान।

9 .नैतिक तथा धार्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

डा. वीरेन्द्र कौशिक	अश्विनी मेहता	चन्द्रमोहन कौशल
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

अविद्या:- जो विद्या से विपरीत है, भ्रम, अंधकार और अज्ञानरूप है, इसलिये इसको 'अविद्या' कहते हैं।

(महर्षि दयानन्द)

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व शिवरात्रि पर्व के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य गर्ल्ज सी.सै.स्कूल पटियाला

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1. पंजाब सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त।
2. नगर के मध्य में स्थित
3. 10+2 तक की शिक्षा (आर्ट्स व कामर्स ग्रुप) तदर्थ नये भवन के ब्लाक का विशेष प्रबन्ध।
4. पुस्तकालय, प्रयोगशाला एवं हवादार कमरों वाली इमारत।
5. बिजली,पानी आदि की मूलभूत आवश्यकताओं की समुचित व्यवस्था।
6. राष्ट्र प्रेम, धर्म व संस्कृति का आदर, भाइचारे की भावनाओं का विकास कर भारतीयता पर आधारित चरित्र निर्माण पर विशेष बल
7. आर्य समाज के दस नियम, गायत्री मंत्र, नैतिक व धार्मिक शिक्षा की परीक्षाओं की विशेष व्यवस्था।
8. कम्प्यूटर, संगीत व गृह-विज्ञान की शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
9. स्कूल के अति उत्तम शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
10. रैडक्रास, होम नर्सिंग, गर्ल गाईड की शिक्षा देकर विद्यार्थियों में सहायता का भाव उत्पन्न करना।
11. प्रधानाचार्य अनुभवी प्रतिभावान, सुशिक्षित व नगर में प्रतिष्ठित सुचारू प्रबन्ध कमेटी के योग्य निर्देशन में

अपने उच्च शिक्षित पूर्णतया योग्य अनुभवी स्टाफ के साथ मिल कर सफलतापूर्वक पाठशाला का संचालन कर रही है।

नये सत्र में अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सोमप्रकाश	शैलेन्द्र मेहरा	किरण जिन्दल
प्रधान	प्रबन्धक	प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

परिमाग्ने दुश्चरिताद्वाध्स्व मा सुचरिते भज।

यजु. 4/28

हे प्रकाशमय प्रभो ! मुझे दुराचार से रोको और सच्चरित्र में प्रेरो

❀❀❀

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❀❀❀

हार्दिक शुभकामनाएं

❀❀❀

आर्य कन्या सी.सै.स्कूल, बस्ती नौ, जालन्धर

❀❀❀

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ

निरन्तर उन्नति कीओर अग्रसर

विशेषताएं

विशाल भवन, हवादार कमरे, उच्च शिक्षित व
शिक्षा को समर्पित स्टाफ, कन्याओं के
विकास के लिये निरन्तरकार्यरत,
नैतिक शिक्षा पर
विशेष बल।

नए सत्र में अपनी कन्याओं के उज्जवल भविष्य
और आदर्श व उच्च शिक्षा के लिये
सम्पर्क करें।

ज्योति शर्मा
प्रधान

सुधीर शर्मा
प्रबन्धक

मीनू सलूजा
कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म् ॥

ओ३म् अस्माकमिन्द्रः स्मृतेषु ध्वजेष्वस्माकं या इषवस्तु जयन्तु।
अस्माकं वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माकं उ देवा अवता हवेषु॥

(साम. अध्याय 22, खंड 4, मंत्र 2)

भावार्थ: वीरों के बल से विजयी हम, फहरावें जय कीर्ति ललाम। देव हमारे धरती तल पर, प्राण पसारे जय वरदान। अमर शहीदों के पथ पर चल कर शान्ति का करें, प्रसार, शक्ति हमें दो भगवन ऐसी, वेद धर्म का हो विस्तार।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोध पर्व के शुभ अवसर पर

❖❖❖

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य सी.सै.स्कूल बस्ती गुजां,जालन्धर

❖❖❖

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व आर्य विद्या परिषद के निर्देशन में चलता हुआ निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर

विशेषताएं

1. विशाल भवन।
2. खेल के मैदान।
3. हवादार कमरे।
4. शिक्षा को समर्पित अध्यापक वृन्द।
5. अहर्निश छात्र वर्ग के विकास के लिये कार्यरत।

अपने लड़के व लड़कियों को धार्मिक शिक्षा दिलवाने के लिये
शिक्षा शास्त्री बनाने के लिये,सर्वांगीण विकास के लिये
तथा उनका उज्जवल भविष्य बनाने के लिये
आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल, बस्ती गुजां
जालन्धर में प्रथम श्रेणी से 10+2
तक की पढ़ाई के लिये
प्रवेश करवाएं।

सरदारी लाल आर्य	विशाल पुरुथी	श्रीमती सारिका
प्रधान	मैनेजर	प्रिंसीपल

॥ओ३म्॥

पंडितः- जो सत् असत् को विवेक से जानने वाला धर्मात्मा, सत्यप्रिय, विद्वान और सब का हितकारी है उसको पंडित कहते हैं।

-महर्षि दयानन्द

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस एवं बोधपर्व के पावन अवसर पर

❋❋❋

हार्दिक शुभकामनाएं

❋❋❋

डी.एन.माडल सी.सै.स्कूल मोगा

❒ विशेषताएं ❒

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी स्टाफ।
2. सभी प्रकार की आधुनिक सुविधाओं से युक्त।
3. कम्प्यूटर कक्षाओं, पुस्तकालय एवं समृद्ध प्रयोगशालाओं का उत्तम प्रबन्ध।
4. गत वर्ष की उज्जवल उपलब्धियों, शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।

उच्च स्तरीय शिक्षा, सांस्कृतिक गतिविधियों और राष्ट्रीय निर्माण में क्षेत्र की सर्वश्रेष्ठ संस्था।

सी.बी.एस.ई. दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल एडवोकेट
उप प्रधान

॥ ओ३म् ॥

विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।
यद्भद्रं तन्न आसुव॥ (यजु. 30/3)

(सवित) हे संसार के उत्पन्न करने वाले, संसार पर शासन करने वाले, संसार को शुभ प्रेरणा देने वाले, (देव) दिव्यगुणयुक्त परमेश्वर! (विश्वानि) सब (दुरितानि) बुराईयों को, दुरवस्थाओं को (परा+सुव) दूर कीजिए। (यत्भद्रम्) जो भद्र [है] (तत् नः) वह हमें (आसुव) दीजिए।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

डी.एम कालेज मोगा

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1. प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा प्रधान
कृष्ण गोपाल एडवोकेट उप प्रधान
डा. एस.के. शर्मा कार्यकारी प्रिंसीपल

॥ ओ३म ॥

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।४।।

भावार्थः तुम्हारे संकल्प और प्रयत्न मिल कर हों, तुम्हारे हृदय परस्पर मिले हुये हों। तुम्हारे अन्तःकरण मिले रहें। जिसमें परस्पर सहायता से तुम्हारी भरपूर उन्नति हो।

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

आर्य माडल हाई स्कूल-मोगा

अपने बच्चों के उज्जवल भविष्य, चरित्र निर्माण और सर्वतोमुखी विकास के लिये सेवा का अवसर दें।

❒ विशेष आकर्षण ❒

1. सुसज्जित भवन, खुले हवादार कमरे।
2. अनुभवी एवं उच्च शिक्षित स्टाफ।
3. हाई पावर विद्युत जनरेटर, शुद्ध एवं शीतल पेयजल।
4. आधुनिक कम्प्यूटर प्रयोगशाला, स्मार्ट कक्षाएं व यंत्रों से लैस साईंस व गणित प्रयोगशाला।
5. सी.सी.टी.वी. कैमरों का विद्यालय में उचित प्रबन्ध।
6. उच्च स्तर की सफाई व बढ़िया अनुशासन।
7. नैतिक शिक्षा व धार्मिक शिक्षा पर बल।
8. की कक्षाओं का आरम्भ शीघ्र।
9. खेलों का उचित प्रबन्ध।
10. आवश्यक पाठ्य सामग्री युक्त पुस्तकालय।
11. वैदिक शिक्षा व सासाहिक हवन यज्ञ।
12. विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु विशेष ध्यान

अपने बच्चों के उ जवल भविष्य के लिये सम्पर्क करें।

सत्यप्रकाश उप्पल	नरेन्द्र सूद	समीक्षा शर्मा
प्रधान	मैनेजर	प्राचार्य

॥ ओ३म् ॥

देव सवितः प्रसुव यज्ञं प्रसुव यज्ञपतिं भगाय। दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः पुनातु वाचस्पति वाचं नः स्वदतु ॥ (यजु. 30/3)

हे परमात्मा! सबको सत्कर्म करने और सत्कर्मों का संरक्षण करने की बुद्धि दो। अपने उत्तम ज्ञान से पवित्र करने वाले ज्ञानी से हम सब ज्ञान को पवित्र करें। उत्तम वक्ता द्वारा हम सब वाणी को मधुर बनाएं, जिससे हम सबकी उन्नति हो

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

डी.एम कालेज आफ एजुकेशन

❐ *आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की देख-रेख में निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर* ❐

संस्था के विशेष आकर्षण

1.प्रशिक्षित एवं अनुभवी व मेहनती स्टाफ।
2. पढ़ने के लिये नव सुविधाओं से युक्त कमरे।
3. गत वर्षों की उज्जवल उपलब्धियां शैक्षणिक श्रेष्ठता का ज्वलंत प्रमाण।
4. मोगा के क्षेत्र में प्रतिष्ठता प्राप्त कालेज।
5. विद्यार्थियों के सर्वतोमुखी विकास पर विशेष बल।
6. चरित्र निर्माण व नैतिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान।
7. हर प्रकार की आधुनिक सुविधाएं।

प्रवेश के लिये सम्पर्क करें

सुदर्शन शर्मा
प्रधान

कृष्ण गोपाल एडवोकेट
उपप्रधान

॥ ओ३म्॥

शतहस्त समाहर सहस्त्रहस्त संकिर।

सैंकड़ों हाथों से कमाओ और हजारों हाथों से शुभ कार्यों में खर्च करो।

☆☆☆

महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध उत्सव के पावन अवसर पर

☆☆☆

हार्दिक शुभकामनाएं

☆☆☆

आर्य कालेज फार वूमैन खरड़

1. कम्प्यूटर शिक्षा का विशेष प्रबन्ध।
2. कढ़ाई सिलाई का विशेष प्रबन्ध।
3. फूल बनाना, खिलौने बनाने की विशेष शिक्षा।
4. शत-प्रतिशत परीक्षा परिणाम।
5. अनुभवी तथा मेहनती स्टाफ।

❖❖❖

निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर

❖❖❖

अपनी लड़कियों के उज्जवल भविष्य के लिये, उन्हें नैतिक शिक्षा व उच्च शिक्षा को प्राप्त कराने के लिये सम्पर्क करें।

❖❖❖

अजय अग्रवाल	अशोक शर्मा	अमनदीप कौर
प्रधान	सैक्रेटरी	प्रिंसीपल

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में भाग लेने पर प्रतियोगी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में निर्णायक के रूप में भाग लेने पर डा. सरला भारद्वाज जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में निर्णायक के रूप में भाग लेने पर डा.यशप्रीत को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य मर्यादा साप्ताहिक का महर्षि दयानन्द जन्म दिवस व बोध पर्व विशेषांक 6 3 मार्च एवं 10 मार्च, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में वैदिक प्रवक्ता श्री राजू वैज्ञानिक को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल वरिष्ठ सदस्य आर्य समाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में श्री नरेन्द्र सूद जी मोगा को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल वरिष्ठ सदस्य आर्य समाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में आर.के.आर्य कालेज नवांशहर के कार्यकारी प्रिंसीपल श्री संजीव डाबर जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में निर्णायक मंडल के रूप में भाग लेने पर डा.मेहमा खोसला जी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में भाग लेने पर प्रतियोगी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में भाग लेने पर प्रतियोगी को सम्मानित करते हुये सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी एवं श्रीमती गुलशन शर्मा जी। उनके साथ खड़े हैं श्री राजू वैज्ञानिक वैदिक प्रवक्ता, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज, श्री संजीव डाबर कार्यकारी प्रिंसीपल, श्री विनोद भारद्वाज जी एवं श्री जिया लाल शर्मा जी।

रजि. नं. पी.बी./जे.एल-011/2018-20 RNI No. 26281/74

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी को सम्मानित करते हुये आर्य समाज नवांशहर के कार्यकारी प्रधान श्री विनोद भारद्वाज जी एवं अन्य।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के तत्वावधान में आर्य समाज नवांशहर द्वारा महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव पर आयोजित पंडित हरबंस लाल शर्मा स्मृति वैदिक वार्षिक भाषण प्रतियोगिता 2019 में रनिंग ट्राफी के साथ डी.ए.एन कालेज आफ एजुकेशन फार वूमैन नवांशहर की छात्राएं।

श्री प्रेम भारद्वाज महामंत्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रेस, मण्डी रोड जालन्धर में मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सभी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।